

रामकृष्णकी गल्

हिन्दी शिशुतोष ग्रन्थमाला ।

रामकृष्ण

की

गल्पें

लेखक

प्रो० गङ्गापति सिंह बी० ए०

हिन्दी पोष्ट ग्रेजुएट लेकचरर

कलकत्ता युनिवर्सीटी ।

प्रकाशक :—

श्रीयुत शिशिरकुमार मित्र बी० ए०

शिशिर पबलिशिं हाउस

कालेज ष्ट्रीट मार्केट

कलकत्ता ।

मूल्य —॥०)

हिन्दी शिशुतोष ग्रन्थमाला ।

रामकृष्ण

की

गल्पें

लेखक

प्रो० गङ्गापति सिंह बी० ए०
हिन्दी पोष्ट ग्रेजुएट लेकचरर
कलकत्ता युनिवर्सीटी ।

प्रकाशक :—
श्रीयुत शिशिरकुमार मित्र बी० ए०
शिशिर पब्लिशिं हाउस
कालेज ष्ट्रीट मार्केट
कलकत्ता ।

मूल्य —॥०)

प्रिण्टर—
श्रीविनोद बिहारी पाल एम० एस० सी०
"बङ्गालप्रिण्टिङ्ग वर्क्स"
कलकत्ता ।

विषय सूची ।

इति।

चित्रसूची ।

इति ।

शुद्धाशुद्धि पत्र ।

का

अशुद्ध	शुद्ध	पृः ंक्ति
ढनाढन—	ठनाठन	िंसे
पुछा—	पूछा	२५की
पिछे पिछे—	पीछे पीछे	३४
डवे—	डबे	३४

श्रीश्रीरामकृष्ण परमहंसदेव।

मैं समझता हूं कि तुम लोगोंने श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव का नाम सुना होगा। किन्तु उन्हें किस प्रकारसे आदि-शक्ति जगन्माता भगवतीजीका दर्शन मिला यह बात तुम लोगोंमेंसे कितने नहीं जानते होंगे। इतने बड़े साधु महात्माकी जीवनीकी सब बातें जानना उचित है। इसीलिये आज उनकी जीवनी की कथाएँ तुम लोगोंको संक्षेपसे कहूंगा।

हुगली जिलेमें "कमारपुर" नामका एक छोटा गांव है। सम्प्रति इस गांवकी अवस्था बहुत बुरी हो गई है किन्तु पुराने समयमें इस गाँवमें बहुत धनी लोग वसते थे। इसलिये गाँवकी चमक-दमक कुछ कम न थी। इस गाँवमें "क्षुदिराम चट्टोपाध्याय" नामके एक दरिद्र ब्राह्मण रहते थे। यद्यपि वे दरिद्र थे तथापि उनके ऐसे आचार विचारके ब्राह्मण उन दिनोंमें बहुत कम पाये जाते थे। "रघुवीर" नामकी "शालग्राम" शिला उनके घरमें थी। वे उसीकी पूजा और सेवा दिन रात करतेथे।

क्षुदिरामकी स्त्रीका नाम "चन्द्रमणि देवी" था। चन्द्रमणिका स्वभाव ऐसा सरल था कि उसको अपने तथा दूसरे में कुछ भेद नहीं मालूम पड़ता था। किसीका दुःख देखकर वह स्थिर या निश्चिन्त नहीं रह सकती थी। उसका जीवन इसी प्रकार बहुत दिन तक बीता। भूखे पड़ोसियोंको अपना अन्न देकर स्वयं प्रफुल्लमनसे उपवास करके रह जाती थी।

हुगली जिलेमें इसी "कामारपुर" गाँवमें १२४२ सालमें फागुन महीने की द्वितीया तिथिमें चन्द्रमणि देवीके गर्भ से श्रीराम कृष्ण परमहंसदेव ने जन्म लिया। चन्द्रमणि देवीको इससे पहले दो लड़के और एक लड़की हो चुकी थीं। श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव उसकी सन्तानमें सबसे छोटे पुत्र थे। 'क्षुदिराम' ने इस छोटे लड़केका नाम गदाधर रक्खा था। कब और कैसे उनका नाम रामकृष्ण हुआ यह तुम लोगोंको पीछे कहूंगा।

रामकृष्णके दो बड़े सहोदरोंके नाम रामकुमार और रामेश्वर थे। बहिनका नाम कात्यायनी था। रामकृष्ण जब सात ही बरसके थे तभी उनके पिताजी (क्षुदिराम)ने शरीर त्याग किया। क्षुदिरामके मरनेके बाद उस आश्रमका भार उन दोनों बड़े भाई रामकुमार तथा रामेश्वर पर पड़ा। दोनों भाई घर द्वार चलानेके लिये जीजानसे परिश्रम करने लगे किन्तु वैसा न होकर घरके कामोंमें बड़ी कठिनाइयाँ होने लगीं। यहाँ तक कि रामकुमारको कुछ ऋण भी लेना पड़ा। अब रामकुमारको केवल यही चिन्ता लगी रहती थी कि कैसे ऋणको चुकाऊंगा, कैसे फिर घरमें

शाहखर्चीं आवेगी। उसने बहुतसोच विचार कर स्थिर किया कि कलकत्ते जाकर अर्थ उपार्ज्जन करूँगा। बस, एक शुभ दिन देखकर और माताको प्रणामकर तथा उनके चरणकी धूलीको मस्तक पर लगाकर, कलकत्तेको रवाना हुआ। कलकत्तेमें आकर रामकुमारने "झामापोकर" महल्लेमें एक टोल* खोल दिया ; उस समय रामकृष्ण की उमर चौदह बरस की थी।

रामकुमारके कलकत्ते चले आने पर उन लोगोंके गृहदेवता "रघुवीर" शालग्रामकी पूजा रामकृष्ण ही करने लगे। उस समयमें रामकृष्ण उसी गाँवकी पाठशालामें लिखना पढ़ना सीखते थे किन्तु लिखने पढ़नेमें उनका विशेष अनुराग न था। उनका स्वर बहुत मधुर था। बचपन ही से उन्हें गाना बहुत पसंद था। किसी के मुखसे कोई गीत एकबार भी सुननेसे उन्हें कण्ठस्थ हो जाता था, और वह उसे बड़ी लय से गाते थे। कामारपुर गाँव के सभी रामकृष्णको प्यार करते थे। स्त्री पुरुष सभी उनको आदरके साथ अपने अपने घरोंमें ले जाकर उनका सुमधुर गाना सुना करते थे। रामकृष्णको कुछ भी उज्र न था। जो लोग सादर उन्हें अपने घर बुलाते उनके यहां जाकर अपने मधुर गान से उनको मोहित कर लेते थे। रामकृष्णकी उमर जब सतरह बरसकी थी तब रामकुमारने यह देखकर कि गाँवमें रामकृष्णका पढ़ना लिखना नहीं बनता उसे अपने साथ कलकत्ते ले आये। रामकुमारने

* अध्यापक गाँवके जिस स्थानमें विद्यार्थियोंको संस्कृत पढ़ाते हैं उसका नाम 'टोल' है।

चेष्टा करनेमें कुछ भी त्रुटि नहीं की परन्तु उससे क्या होसकता था । बचपनहीसे रामकृष्णको धार्म्मिक विषयको छोड़ और किसी तरह की बात मनमें नहीं आती थी । रामकृष्णके कलकत्ते आनेके कुछ दिन बाद ऐसी घटना हुई कि कलकत्तेके जानबाजारके रहनेवाले राय राजेन्द्रचन्द्र दासकी विधवा स्त्री "रासमणि" ने कलकत्तेसे तीन माइल दूरपर दक्षिणेश्वर नामके स्थानमें कई बीघे जमीन खरीदीं और वहांपर एक देवालय बनवाया । उसमें कालीजी तथा राधाकृष्णकी प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा करने तथा विधिपूर्वक पूजा करने और करानेकी व्यवस्था देनेके लिये सभी नामीग्रामी ब्राह्मण पण्डितोंको निमन्त्रण दिया गया । न्योता पाकर पण्डित लोग इकट्ठे हुए और बहुत वाद विवाद करनेपर बोल उठे "यह रानी जातकी धीवर (मल्लाहिन) है । कोई ब्राह्मण उससे प्रतिष्ठा की हुई प्रतिमाकी पूजा नहीं कर सकता ।" ब्राह्मण पण्डितोंका यह निर्णय सुनकर सचमुच रानीके दिलमें गहरी चोट लगी । उन्हें ब्राह्मणोंके विचारसे सन्तोष नहीं हुआ । रासमणिने ऐसा सोचकर कि निश्चयही शास्त्रमें इसकी कोई व्यवस्था होगी, देश विदेशके पण्डितोंकी व्यवस्था प्राप्त करनेके लिये लोगोंको भेजा । क्रमशः यह बात रामकुमारके कानोंमें पड़ी उसने तुरतही व्यवस्थापत्र लिखकर भेज दिया कि रानी गुरुको अपना देवालय दान कर दें तब ऐसा करनेसे कालीजी तथा राधाकृष्णकी पूजामें किसी प्रकार की बाधा नहीं होगी ।

रामकुमारके इस व्यवस्थापत्रको पढ़कर रानी रासमणिने

आनन्दकी सीमा नहीं रही। शीघ्रही रामकुमारकी व्यवस्थाके अनुसार मूर्त्तिकी प्रतिष्ठाके लिये एक दिन स्थिर किया गया और रानीके विशेष आग्रहसे रामकुमारहीने उस कार्य्यका भार लिया। सन् १२६२ सालमें १८ जेठको बड़े समारोह के साथ उन मूर्त्तियोंकी प्राण-प्रतिष्ठा हुई। बड़े भाईके साथ रामकृष्ण भी दक्षिणेश्वरके महोत्सवको देखने गये थे किन्तु धीवरसे प्रतिष्ठित देवालयमें अन्न ग्रहण करना धर्मानुकूल नहीं है ऐसा बिचारकर उनने उस दिन बाजार जाकर मूड़ी लाई खरीदकर खा ली।

देवालयमें मूर्त्तियोंकी प्राण प्रतिष्ठा होनेपर भी रामकुमारको छुट्टी न हुई। रानीकी विशेष जिद्दमें पड़कर मूर्त्तिकी पूजाका भार उन्हींको लेना पड़ा। रामकृष्णको पहले धीवरसे स्थापित देवालयमें रहना स्वीकार नहीं हुआ था। किन्तु जब रामकुमारने उन्हें समझा बुझा दिया कि इसमें दोष नहीं है तब उनने और कोई आपत्ति नहीं की। ऐसा होनेपर रामकृष्ण भी अपने बड़े भाईके साथ दक्षिणेश्वरमें रहने लगे। रानीने अपने दामाद मथुरमोहन विश्वासके ऊपर देवालयके तत्वावधान (इन्तज़ाम) का भार दिया था। वे रामकृष्णके सरल स्वभावको देखकर एकापक मोहित हो गये और भगवानकी सेवा के किसी काममें उन्हें नियुक्त करनेकी चेष्टा करने लगे। रामकृष्ण पहले भगवानकी सेवा अर्चन सम्बन्धी किसी काममें हस्तक्षेप नहीं करते थे। आखिरमें भाईके अनुरोधसे और मथुर बाबूकी ज़िद्दसे मज़बूर होकर ठाकुर

जीका शृङ्गार करनेका कार्य्य स्वीकार किया। सिंगारीके पदके स्वीकार करनेके कुछ दिन बाद रामकृष्णके दिमाग़में कुछ गड़बड़ी होने लगी। 'मा' को शृङ्गार करते २ (अर्थात् वस्त्र भूषणादि पहनाते पहनाते) वे भावमें विह्वल होने लगे। 'मा' के स्वरूप तथा मूर्त्ति देखनेके लिये उनका प्राण व्याकुल होने लगा। इसी समयमें मामूली कितने दिनोंके दुःखसे रामकुमारने शरीर छोड़ दिया। रामकुमारके मरने बाद कालीजीकी पूजाका भार रामकृष्णहीके ऊपर पड़ा। बहुत दिनों तक पूजा करते २ रामकृष्णके मनमें एक विचित्र नवीन भाव उत्पन्न हुआ। वे जहां तहां देवालयकी धूलीमें लेटे हुए 'मा' 'मा' पुकारकर बड़े ज़ोरोंसे चिल्लाया करते थे। पूजाके समयमें मन्दिरमें जाकर पूजा करके नैवेद्यको कौवों तथा बिल्लियोंको खिला देते थे और खाली 'मा' ,मा' करते हुए रोते रहते थे। रामकृष्णकी यह अवस्था देखकर देवालयके सभी लोगोंने स्थिर किया कि रामकृष्ण पूरा पागल हो गया है। यह समाचार मथुर बाबू तथा रासमणिको शीघ्रही मिला। वे दक्षिणेश्वरमें आकर रामकृष्णके कार्य्य व्यवहार देखकर साफ २ समझ गये कि रामकृष्ण मामूली पागल नहीं है। उसके पागलपनेके भीतर एक ऐसी बात छिपी है जो मामूली आदमियोंसे नहीं परखी जा सकती है। वे सचमुच महात्मा हैं, उन्होंने सचमुचही भगवतीका साक्षात् दर्शन पाया है यह बात समझनेमें रासमणिको कुछ भी देरी नहीं लगी। उनने मनही मन सोचा कि इतने दिनोंपर उनके मन्दिरकी स्थापना करना सफल हुआ।

दिनों दिन रामकृष्णकी ऐसी अवस्था हो गई कि उनके द्वारा भगवतीकी पूजा होना असम्भव सा ज्ञात होने लगा। उस समय उन्हें जो देखता वह निश्चयही जानता कि वे बिलकुल पागल हो गये हैं। चन्द्रमणि देवी (रामकृष्णकी मा) अपने बेटेकी यह हालत सुनकर उसे घर लानेकी धुनमें पड़ी।

मथुर बाबूने रामकृष्णकी मा की इच्छा जानकर सभी बातों का बन्दोवस्त करके रामकृष्णको कमारपुर भेज दिया। "कमारपुर" में आकर रामकृष्ण कुछ अच्छे हुए। चन्द्रमणि देवीने अपने स्वजनवर्गके साथ परामर्श करके लड़केका ब्याह कराना निश्चय किया। कमारपुरके समीप ही जयरामवाटी गाँवमें रामकृष्णका विवाह स्थिर हुआ। इस गाँवमें रामचन्द्र मुखोपाध्याय नामके एक सदाचारी ब्राह्मण रहते थे। उनकी एक पाँच बरसकी कन्या थी। उसीके साथ रामकृष्ण का शुभ विवाह हो गया।

विवाह होनेके कुछ दिनोंके बाद रामकृष्ण पुनः घूम फिरकर दक्षिणेश्वर आये। दक्षिणेश्वरमें आकर उन्हें फिर भावान्तर हुआ। फिर 'मा' 'मा' कहकर पागल से हो गये। इसी समयमें एक सन्यासिन दक्षिणेश्वरमें आई थी। यह मन्त्र तन्त्र शास्त्रमें बड़ी पण्डिता थी। वह रामकृष्णको देखही कर पहचान गई कि यह महात्मा हैं और उन्हें तन्त्र शास्त्रकी प्रणालीसे साधना सिखाने लगी। इसी सन्यासिनसे तन्त्र साधनमें आपने सिद्धि प्राप्त की। इसके कुछ दिनोंके बाद एक स्वामी परमहंस परिव्राजक दक्षिणेश्वरमें आये। उन्होंने रामकृष्णको देखतेही समझ लिया कि यह

वेदान्त साधनके श्रेष्ठ अधिकारी हैं। उन तोतापुरीके आदेशही से रामकृष्णने सन्यास ग्रहण किया और उसी समय उन्होंने उनका नाम "रामकृष्ण" रक्खा। इसी प्रकार बारह बरसके भीतर रामकृष्ण परमहंसदेवने भारतवर्षमें जितने प्रकारके धर्म्म प्रचलित हैं उन सभोंमें सिद्धि लाभ की। वे जब जो साधना प्रारम्भ करते एकाएकी उसी साधनामें दत्त-चित्त हो मग्न तथा विह्वल हो जाते थे।

रामकृष्ण परमहंसदेव एक महात्मा पुरुष हैं यह बात चारों तरफ खूब फैल गई। लाखों मनुष्य उनका दर्शन करनेके लिये, उनके उत्तम उपदेश सुननेके लिये इकट्ठे होने लगे।

भावकी प्रबलता हीके बीच बीचमें उनकी समाधि होती थी। १२९३ सालमें ३१ वें सावनको आप महासमाधिमें निमग्न हो गये। वह समाधि फिर टूट नहीं सकती। महा पुरुष तो चले गये किन्तु आज भी उनके सैकड़ों हजारों भक्त, शिष्य उनके सदु-पदेशोंको पृथ्वीपर प्रचार कर रहे हैं। उपदेशके बहाने से उनने जो सब ग़ल्पें अपने भक्त तथा शिष्योंको कही थीं उन्हीमेंसे कुछ तुम लोगोंको कहूंगा।

इति।

नारदजी का अहङ्कार ।

नारद एक उच्च कोटिके ऋषि थे। वे दिन रात केवल हरिगुन गाया करते थे। एक समयमें नारदके मनमें बड़ा अहङ्कार हुआ कि मेरे ऐसा हरिभक्त कोई दूसरा नहीं है। भगवान अन्तर्य्यामी हैं। उनसे कुछ भी छिपा नहीं रह सकता। इसलिये नारदके इस अहङ्कार की बातको भी उनने जान लिया। उनने नारद को बुलाकर कहा "हे नारद! पृथ्वी पर मेरा एक बड़ा भक्त पुरुष है। उससे बढ़ कर मेरा और कोई दूसरा भक्त नहीं है। तुमको एकवार उसे देख आना चाहिये।"

भगवान हरि की यह कथा सुनकर नारद के मन में बड़ा दुःख हुआ। वे अपने मनमें सोचने लगे। भगवान यह क्या कहते हैं? मैं दिन रात केवल हरिगुन गान करता हुआ घूमता हूं। मेरे ऐसा और बड़ा भक्त कौन हो सकता है? तोभी उस आदमीको देख आना उचित है।

नारदने भगवानकी बातका कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उस आदमीको देखनेके लिये तभी रवाना हुए। अनेक गाँव, शहर होते हुए अन्तमें नारद उस भक्तके घरके सामने पहुंचे। नारदने वहां आकर देखा कि भगवानने जिसे देखनेके लिये उन्हें भेजा था वह एक किसान है। वह सवेरे एक दफे "श्रीहरि" कहकर हल तथा बैल लेकर खेत चला गया। उसके बाद दिन भर खेती

का काम करके और शाम होनेपर घर आकर रातमें सोनेके पहले एक वार फिर "श्रीहरि" का नाम लेकर सो रहा। नारद तो एकदम अवाक् हो गये और सोचने लगे कि मैं दिन रात हरिगुन गान किया करता हूं सो तो मैं यथार्थ भक्त न हुआ और यह किसान उनका यथार्थ भक्त है यह क्या बात है? भगवानके ऊपर नारदको बड़ा क्रोध हुआ। नारद लौटकर बैकुण्ठमें आये और भगवानसे बोले "भगवन्! यह आपका कैसा विचार हुआ। हम दिन रात आपहीका नाम लेते हैं सो आपके यथार्थ भक्त न हुए। किन्तु वह किसान जो दिन रातमें केवल दो वार आपका नामोच्चारण करता है वही आपका यथार्थ भक्त हुआ।"

भगवान हरिने नारदकी इस वातका कुछ भी उत्तर नहीं दिया उनने एक घड़ा तेल मंगवाकर नारदके हाथमें देकर कहा "यह तेलका घड़ा आप कैलाशमें दे आइये किन्तु सावधान रहिये और देखिये कि एक बूंद भी तेल मिट्टीपर गिरने न पावे" नारद भगवानने हरि से तेलका घड़ा ले लिया। घड़ा लवालव तेल से भरा हुआ था। ज़रासा हाथ हिलनेहीसे तेलको मिट्टीपर गिरजानेका डर था। इसलिये नारद बड़ी सावधानीसे तेलका घड़ा लेकर कैलाशकी ओर चले। दूसरे दिन जब नारद तेलके घड़ेको कैलाशमें देकर लौटे तव भगवानने उनसे पूछा "क्यों नारद! कल्ह आपने कैवार मेरा नाम स्मरण किया था?" भगवानकी वातके उत्तरमें नारद बहुत उदास होकर बोल उठे, "भगवन्! कल्ह क्या आपके नामको स्मरण करनेका समय



नारद बड़ी सावधानी से तेल का घड़ा ले कर
कैलाश की ओर चले। पृ०—[illegible]

मिला था ? आपने जो तेलका घड़ा दिया था उसीको सम्हालते २ मेरा प्राण निकल रहा था।"

नारदकी बात सुनकर भगवान थोड़ा हँसे और बोले "नारद ! आप एक तेलके घड़ेको सम्हालनेमें इतने व्यस्त हो गये कि सारे दिन रातमें एकवार भी मेरा नाम स्मरण करनेका अवसर न मिला और वह किसान जो दिन रात संसारकी सौ यन्त्रणाओंमें फँसा हुआ है यदि आखिरश दो ही वार मेरा स्मरण करता और एक दिन भी नहीं भूलता तब विचारकर देखिये कि उसके ऐसा मेरा और कौन दूसरा भक्त है ?"

भगवान हरिकी बात सुनकर नारद लज्जाके मारे फिर शिर न उठा सके। साथ २ उनका अहङ्कार भी सदाके लिये छूट गया।

कौन कै बार भगवानका नाम लेता है इससे भक्तिका परिचय नहीं होता। भक्तिका परिचय तब होता है जब विघ्न बाधाएँ आकर उपस्थित होती हैं और उस मुसीबतके दिनों भी, संसारमें सभी लुभानेवाली चीजोंसे फंसा रहकर जो लोग ईश्वरको नहीं भूलते वे ही सच्चे भक्त हैं।

इति।

ब्राह्मणकी गोहत्या ।

किसी देशमें एक ब्राह्मण रहता था। उसे बगीचेका बड़ा शौक था। ब्राह्मणने अपने हाथसे एक ऐसी सुन्दर फुलवारी लगाई थी जैसी और कहां भी नहीं दिखाई देती थी। ऐसे कोई भी उत्तम फलके पेड़ नहीं थे जिन्हें ब्राह्मणने अपने बाग़में नहीं लगाये थे।

एक दिन एक गाय उस बाग़के भीतर पैठकर ब्राह्मणके एक बड़े प्यारे आमके पेड़को एकदम खा गई। उस समयमें ब्राह्मण कुछ दूर पर बैठ एक दूसरे वृक्ष की जड़ को ठीक ठाक करता था। गायने उसके प्यारे आमके पेड़को खा लिया। ब्राह्मण अब अपने क्रोधको नहीं रोक सका। सामनेही एक कुदाली पड़ी थी। वह उसीको उठाकर गायकी तरफ दौड़ा और इतने ज़ोरसे उसे मारा कि गाय का एक पांव टूट गया और वह लंगड़ाने लगी और थोड़ी देर वाद छटपटाकर मर गई। ब्राह्मणने गो-हत्या की है यह खबर शीघ्रही गांव भरमें फैल गई। एक तो गायको मारना बड़ा पाप है। उस पर भी ब्राह्मण होकर उसने गाय मारी इस पापका प्रायश्चित्त भी नहीं है। गाँवके सब लोग मिलकर ब्राह्मणको जातिसे बाहर करने के लिये बन्दोवस्त करने लगे। ब्राह्मण इस बड़ी विपत्तिमें पड़कर और इससे छुटकारा पानेका कोई उपाय न देखकर बोला "मैंने गाय मारी है यह कौन कहता है? गाय तो मैंने नहीं मारी। मेरे इस हाथने गायको मारा है।"

और उसको भी दोषी ठहराना उचित नहीं समझते, क्योंकि यह कार्य्य हाथकी सामर्थ्यके परे है। इसका अपराधी यदि कोई ठहराया जावे तो जिसकी शक्तिसे हमारा हाथ हिलता है वही अपराधी है अर्थात् इस अपराधके लिये दोषी भगवान हैं। न मैं हूं और न मेरा हाथ।" ब्राह्मण भगवानके ऊपर सब अपराध ठहराकर निश्चिन्त हो गया। तत्पश्चात् भगवान एकदिन बूढ़े ब्राह्मणका रूप धरकर उसी ब्राह्मणके पास आये। उस समय ब्राह्मण उस बाग़के भीतर इधर उधर घूम रहा था। भगवानने उससे पूछा "बाबा! यह बाग़ किसका है? ब्राह्मणने तुरन्त उत्तर दिया "मेरा"। भगवानने कहा "वाह! तुम्हारा बाग़ तो बड़ाही सुन्दर है। क्या ही उत्तम २ वृक्षोंसे परिपूरित है। जान पड़ता है कि तुम्हारा माली बड़ा चतुर और परिश्रमी है।" ब्राह्मणने उत्तर दिया "माली वाली मेरे पास कोई नहीं है। मैंने स्वयं ही "यह सब वृक्ष लगाये हैं।"

भगवान बोले क्या यह सचमुच है? क्या यह वृक्ष सचमुच तुम्हारेही लगाये हुए है? यदि ऐसा ही है तो तुम बड़ेही निपुण हो। यह रास्ता तो बहुतही बढ़ियाँ बना है। इस रास्ते को भी क्या तुम्हींने बनाया है?" भगवानकी बातें सुनकर ब्राह्मण फूला न समाया। उसने गम्भीर स्वरसे कहा "इस बाग़में जो कुछ देखते हैं ये सब मेरीही कार्य्यवाही हैं। इस रास्तेको भी मैंने स्वयं तैयार किया है।" ब्राह्मणकी बातों पर भगवान मनही मन हँस रहे थे। उसकी बात समाप्त हाने

पर उनने कहा "महाशय! सभी जब तुमने किया है तब गाय मारनेके लिये भगवान दोषी कैसे हो सकते हैं?" ब्राह्मणके मुखसे और कोई बात नहीं निकली।

अच्छे कामोंके अवसर पर जब अपने करतूतकी बड़ाई करना नहीं छोड़ते हो तब अन्याय काम करनेके लिये भगवान दोषी कैसे होंगे?

इति।

सांप और सन्यासी।

किसी एक गाँवके समीप एक मठ (देवालय) में एक बड़ा साँप रहता था। साँप जैसा बड़ा था वैसाही भयङ्कर भी था। उसके डरसे गाँवके लोग उसके आस पास जानेका साहस नहीं करते थे। यदि कोई आदमी अनजान से उस मठके पास पहुंच जाता तो वह नहीं बचता था। साँप उस पर बड़े जोरसे टूट पड़ता और काट खाता।

मठके नज़दीक उसके रखवालेके लड़के गाय चराया करते थे। वे यदि किसीको उस मठकी तरफ जाते देखते तो उसी वक्त उसको साँपकी बात कहकर उस तरफ जानेसे रोकते। एक दिन एक रखवालेके लड़के ने घर लौटते समय देखा कि एक सन्यासी उस मठकी ओर जारहा है। एक आदमी उसके पास लपकके गया

और उसको जाकर कहा "महाशय! उस तरफ न जाना, न जाना। इस मठमें एक बड़ा भारी साँप है। वह बड़ा भयङ्कर है। मनुष्यका शब्द पातेही दौड़कर काट खाता है।"

रखवालेके लड़केकी बातोंपर वह सन्यासी कुछ स्तब्ध हुआ और गम्भीर स्वरसे बोला "बच्चा! मैं सन्यासी हूं साँप बाँपसे नहीं डरता। उसमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि सन्यासीको काट खावे।"

सन्यासी और कोई बात न बोला केवल मुसकराकर मठकी ओर चला। सन्यासी उसका निषेध न मानकर चलाही गया। यह देखकर वह रखवालेका लड़का गाँवमें फिरकर न गया। साँप क्या करता है यह देखनेके लिये गाय और हल लेकर वह वहीं ठहर गया। सन्यासी ज्योंही मठमें घुसा त्योंही वह साँप भयङ्कर "फुफुकार" करके सन्यासीको काटनेके लिये दौड़ा।

किन्तु जब सन्यासीने उसकी ओर फिरकर देखा तब उसका 'फुफुकारना' बन्द हो गया। वह फिर फण नहीं उठा सका। मरे हुएकी तरह सन्यासीके पाँवके सामने पड़ रहा। तब सन्यासीने गम्भीर स्वरसे साँपको कहा "क्यों भाई! क्या मुझे काट खाना चाहते हो?" साँपकी तब ऐसी हालत हो गई कि वह लाज के मारे कुछ नहीं कर सका। जैसे फणको नीचे गिराया था वैसेही नीचे किये हुए रहा। सन्यासीने फिर कहा "भाई! यदि तुम प्रतिज्ञा करो कि अब फिर कभी किसीको नहीं काटूंगा तो मैं तुम्हारी पहली शक्ति फेर देसकता हूं।" साँप बेचारा तब क्या करता और कोई उपाय तो था ही नहीं। मजबूर होकर उसे

सन्यासीके समीप यह प्रतिज्ञा करनी पड़ी कि फिर भविष्यमें किसीको मैं नहीं काटूंगा। सन्यासी तब उसकी पहली शक्ति वापस देकर अपने स्थानको चला गया और बेचारा साँप सू सू करता हुआ अपने गढ़ेके भीतर जा पैठा।

सन्यासीके समीप उसने प्रतिज्ञा की थी। इसलिये साँप किस तरह मनुष्यको काट सकता था। वह अत्यन्त सीधेपनसे जीवन बीताने लगा। साँपके उस अद्भुत आचरणकोदेख कर रखवालके लड़केने सोचा कि साँपका विषैला दाँत निश्चय टूट गया है। उसको अब कुछभी शक्ति नहीं है। फिर बाद वह साँपको देखकर ढेलोंसे मारने लगा तौभी साँपको फण भी उठाता न देखकर उसका साहस और भी बढ़ गया। उसने एक दिन साँप की पूंछ पकड़कर ऐसा घुमाया कि साँपके सपूर्ण अङ्गकी हड्डियाँ चूर चूर हो गईं। तोभी वह किसीको कुछ नहीं कहता। किसी प्रकार जान लेकर भागा और उस गढ़ेमें पैठ गया।

किसी समय वही सन्यासी फिर उसी मठमें आया। उसने साँपकी वह अवस्था देखकर विचलित स्वरसे पूछा "भाई तुम्हारी यह अवस्था कैसे हुई। तुम्हें कौनसी बीमारी हुई है?"

साँपने शिर नमा कर कहा "हे प्रभु! मुझे कोई रोग नहीं है। आपहीकी आज्ञानुसार मैं किसी मनुष्यको नहीं काटता। इसीलिये मनुष्योंने मेरी यह हालतकी है। उस दिन एक आदमी ने मेरी पूंछ पकड़ कर ऐसा घुमाया कि मेरे समूचे अङ्गकी हड्डियाँ चूर चूर हो गईं।"

साँपकी यह बात सुनकर सन्यासी का दिल बहुत दुखा और उन्होंने गम्भीर स्वर से कहा "मैंने तो तुझे किसीको काटनेसे मना किया था किन्तु फुफुकारने से तो मना नहीं किया। तूने 'फुफुकार' क्यों नहीं छोड़ी। ऐसा करनेपर तेरी यह बुरी हालत नहीं होती। लोगोंके साथ बुरा बरताव न करो किन्तु जिससे मनुष्य तेरी बुराई न कर सकें उसकेलिये सावधान जरूर रहना चाहिये।" सन्यासी यह कहकर चला गया। दूसरे दिन वह रखवाले का लड़का उस मठमें ज्योंही आया त्योंही साँप भयङ्कर फुफुकार कर उठा। उस लड़केने सोचा कि साँपके विषैले दाँत फिर जनमे हैं। यह समझकर जिधर बना भाग गया। इस तरह वह साँप बहुत निश्चिन्त पूर्वक रहने लगा।

इति।

घण्टा कर्ण।

किसी देशमें एक आदमी रहता था जो दिन रात बराबर शिव की पूजा करता था। उसके ऐसा शिव-भक्त इस बड़े सचराचर जगत्में दूसरा नहीं था। वह सचमुच शिवको जानसे भक्ति करता था किन्तु उससे क्या होता? उसके चरित्रमें एक बड़ा दोष यह था कि वह और किसी देवताको नहीं मानता था।

भक्ति करना तो दूर ठहरा किन्तु वह मनही मन उनलोगोंको घृणा करता था। उस आदमी की अराधनासे सन्तुष्ट होकर एक दिन शिवजीने उसे दर्शन दिया और कहा "देखो जी सभी देवता एक ही हैं इसलिये किसी एकको घृणा करनेपर सभीकी घृणा होती है। तुम जबतक और और देवताओंको भक्तिकी दृष्टिसे न देखोगे तबतक तुम किसी तरह मुझे सन्तुष्ट नहीं कर सकते"। शिबजीने उस आदमीको यह बात कही और अन्तर्द्धान हो गये। किन्तु तोभी उस आदमीको चेत नहीं हुआ। वह पहले जिस तरह और और देवताओंकी घृणा और निन्दा करता था अब भी वैसाही करता रहा। शिबजी की बातोंका कुछ भी असर नहीं पड़ा किन्तु उल्टा फल हुआ। पहले वह खुलम खुला किसी देवता की निन्दा नहीं करता था किन्तु अब वैसा करने लगा। इसके कुछ दिनोंके बाद शिवजीने फिर एक दिन हरिहर मूर्त्ति में दर्शन दिया। वह आदमी महादेवजीके बगलमें बिष्णुको देखकर भीतर भीतर बड़ा जला। उसने हरिकी मूर्त्ति की ओर एक दफे देखना भी नहीं चाहा। केवल शिवजीकी पूजा कर ली। उस आदमी के इस ब्यवहारसे शिवजी मनहीमन बड़े असन्तुष्ट हुए और तुरतही उसके सामनेसे अन्तर्द्धान हो गये। किन्तु उससे क्या होता। वह तोभी दूसरे देवताओंको भक्तिकी दृष्टिसे नहीं देखता था। उनलोगोंकी जैसी अवहेलना करता था वैसाही करता रहा।

उस आदमीकी जिद्दकी बात तुरतही फैल गई। देश भरके



घण्टों के ठनाढन बजने से श्रीविष्णु नाम उसके कानों तक नहीं घुस सकता था। पृ:—१८

लड़केलोगोंने उसको देखतेही 'श्रीविष्णु' 'श्रीविष्णु' चिल्ला कर उस आदमीको चिढ़ाना शुरू किया।

वह मनुष्य शिवका ऐसा कट्टर भक्त बनकर भागता था कि मानों लड़कोंका 'श्रीविष्णु' 'श्रीविष्णु' चिल्लाना उसे असह्य हो गया हो। विष्णुका नाम उसके कानमें पड़नेसे वह क्रोध करता था। लड़कोंके 'श्रीविष्णु' 'श्रीविष्णु' चिल्लानेसे छुटकारा पानेके लिये उसने एक उपाय सोचा। उसने दोनों कानोंमें दो बड़े २ घण्टे लटका लिये। जभी लड़कोंका झुण्ड 'श्रीविष्णु' 'श्रीविष्णु' चिल्लाता तब वह जोरसे अपना सिर हिलाता था। घण्टोंके टनाटन बजनेसे 'श्रीविष्णु' नाम उसके कानों तक नहीं घुस सकता था। ऐसा होनेपर लोग उसे 'घण्टाकर्ण' कहने लगे। उसकी जिद्दके कारण वह आज भी हमलोगोंकी दृष्टिमें ऐसा घृणाका पात्र हो गया है कि आज कल्ह भी हमलोगोंके देशके लड़के लोग फागुन महीनेकी संक्रान्तिके दिन घण्टाकर्ण की मिट्टी की मूर्त्ति बनाकर उसे लाठीसे फोड़ कर विग देते हैं।

किसी विषयमें जिद्द करना किसीको उचित नहीं है।

इति।

ब्राह्मण और भागवत ।

एक राज-सभा में एक ब्राह्मण जाकर बोले "महाराज! मैं भागवतमें बड़ा निपुण और पण्डित हूं। मैं श्रीमान्‌को भागवत की कुछ कथाएँ सुनाना चाहता हूं।" राजा यह बात भली-भाँति जानते थे कि जो भागवतका पण्डित होगा, जो भागवतको समझेगा उसका मन भगवान को पहचाननेके लिये ही व्याकुल हो उठेगा। वह मामूली धन तथा सम्मानके लिये राज सभामें कभी नहीं आवेगा। ब्राह्मणकी बातके उत्तरमें राजा बोले "ब्राह्मण देवता! अभी आप भागवतमें निपुण नहीं हुए हैं। आप घर जाइये और वहाँ जाकर भागवतका पूरा मर्म समझिये। मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करता हूं कि जब आप भागवतका मर्मज्ञ हो जाइयेगा तब मैं जरूर ही आपके मुखसे भागवत सुनूंगा।"

राजाके इस उत्तरसे ब्राह्मणने मनहीमन सोचा कि यह राजा बेवकूफ है क्या? मैंने इतने बरसोंसे भागवत पढ़ा है किन्तु राजाने बिना कुछ बूझे सूझे कहा कि मैं इसका मर्मज्ञ नहीं हुआ हूं। ब्राह्मण दुःखित मनसे घर वापस आये और उनने बहुत मन लगाकर फिर एकबार भागवत पढ़ा और कालान्तरमें फिर जाकर राज सभामें उपस्थित हुए। ब्राह्मणको पुनः राज सभामें आये हुए देख कर राजाने फिर वही उत्तर दिया कि अभीतक उन्हें पूरी तौरसे भागवत नहीं आया। राजाके इस व्यवहारसे

ब्राह्मण इस बार बड़े असन्तुष्ट हुए और मनहीमन सोचने लगे कि राजाके इस आचरणका कोई न कोई अर्थ (माने) अवश्य है। ब्राह्मण वापस जाकर घरके सभी दरवाजे और जँगलोंको वन्द करके बैठ गये और खाना सोना छोड़कर केवल भागवतही पढ़ने लगे। इसी प्रकार एकाग्र चित्तसे कुछ दिनों तक भागवत का पाठ करते करते भागवतका गुप्त रहस्य उनके हृदयमें पैठ गया और उसका विकाश होने लगा। साथ साथ उनके धन, सम्मान, कामना, वासना सभी धूलीमें मिल गये और चित्त निर्मल हो गया। राजा के पास फिर जानेकी वात एकवार भी उनके मनमें न समाई।

तबसे लेकर वे अपनेको सब तरहसे भगवानके चरणोंमें अर्पण करके दिनरात उन्हीं की आराधना करनेमें लगे रहे।

बहुत वरस वीत गये और ब्राह्मण लौटकर नहीं आये यह बात राजाने एक दिन अपने मनमें सोची। अभी ब्राह्मण क्या करते हैं यह एकवार देखआना चाहिये। राजा स्वयं एक दिन ब्राह्मणकी कुटीमें चले गये। ब्राह्मण उस समयमें ध्यानमें मग्न थे। सब अङ्गोंसे एक विचित्र दिव्य-ज्योति निकल रही थी। ब्राह्मण को देखकर राजा और अपनेको नहीं रोक सके और तब उनके पाँवोंपर पड़कर बोले "इतने दिनोंपर आपको अब भागवत पूर्णतया ज्ञात हुआ है, अभी आप कृपा करके मुझे अपना शिष्य बनाइये"। ब्राह्मणका तब ध्यान टूटा किन्तु राजाकी वातका उनने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। धन, मान, ऐश्वर्य्य प्रभृतिका लोभ अब उन्हें नहीं था।

ऊपर ऊपर पाठ करनेसे खाली पाठ ही होता है उससे मनुष्य पण्डित या मर्मज्ञ नहीं हो सकता। पण्डित य मर्मज्ञ होनेके लिये मन और प्राण एक करके तब पाठ करन जरूरी होता है।

इति।

चार अन्धे।

एक गाँवमें चार अन्धे रहते थे। उसी गाँव का जमींदार ए हाथी खरीद लाया। गाँवके कितने लोगोंने हाथी नहीं देखा था। जमीन्दारका हाथी जभी आया तभीसे लोग झुण्ड बांध बांध क उसे देखने जाते थे। उन चार अन्धोंने यह बात सुनी कि जमीं दार ने एक हाथी मोल लिया है। हाथीके ऐसा जानवर पृथ पर दूसरा नहीं है यह सुनकर उन चारों अन्धोंको भी हाथ देखने की बड़ी उत्कण्ठा हुई। वे चारों हाथीको देखनेके लि वहां गये किन्तु वे लोग तो अन्धे थे. हाथीको कैसे देख सक थे। हाथसे छू छू कर और टटोल २ कर उसे देखा।

घर आकर जिसने हाथीके पाँव पर हाथ दिया था वह बोल "हाथी ठीक खम्भेके ऐसा होता है"। दूसरे अन्धेने हाथी क सूंड़ को छूया था वह बोल उठा "हाथी खम्भेके ऐस

क्यों होगा ? हाथी तो ठीक एक सोंटा (लाठी) के ऐसा होता है।" तीसरे अन्धेने हाथीके पेट पर हाथ दिया था वह बोल उठा "हाथी खम्भे के ऐसा भी नहीं, सोंटाके ऐसा भी नहीं। हाथी तो एक भारी थैली के ऐसा होता है।" चौथे अन्धेने हाथीका केवल कान छूआ था। वह बोल उठा "मेरी रायमें हाथी एक बड़े पंखेके ऐसा होता है।"

यह बात लेकर चारों अन्धे बड़ा बादविवाद करने लगे। कोई किसी की बात मानना नहीं चाहता था। जिसने हाथीका जो अङ्ग स्पर्श किया था वह उसी रूपसे हाथीका परिचय देने लगा। उसी समयमें एक भलेमानुस वहीं होकर जा रहे थे। चारों अन्धे आपस में किस बातके लिये तर्क कर रहे हैं वह सुननेके लिये वह वहाँ पर खड़े हो गये। उनने उनलोगों के तर्कके विषय में कुछ विशेष न समझ कर कहा " अरे भाई ! तुम लोग किस वास्ते इतना तर्क वितर्क कर रहे हो ?" भले मानुसके प्रश्नके उत्तरमें चारों अन्धोंने कह सुनाया और पूछा "महाशय ! हम लोग आपही को मध्यस्थ (पञ्च) मानते हैं। कहिये तो महाशय ! हाथीका क्या रूप है ?"

भलेमानुस ने कहा "अरे भाई ! तुम लोग सीधे सीधे ही तर्क कर रहे हो कि हाथीका कैसा रूप है। तुममें से कोई नहीं जानते। हाथी खम्भे के ऐसा नहीं होता, सोंटा के ऐसा भी नहीं होता, पंखेके ऐसा भी नहीं होता। तब हाथीका पाँव खम्भे के ऐसा, सूंड़ गदा के ऐसा, पेट थैलीके ऐसा और दोनों कान पंखेके ऐसे

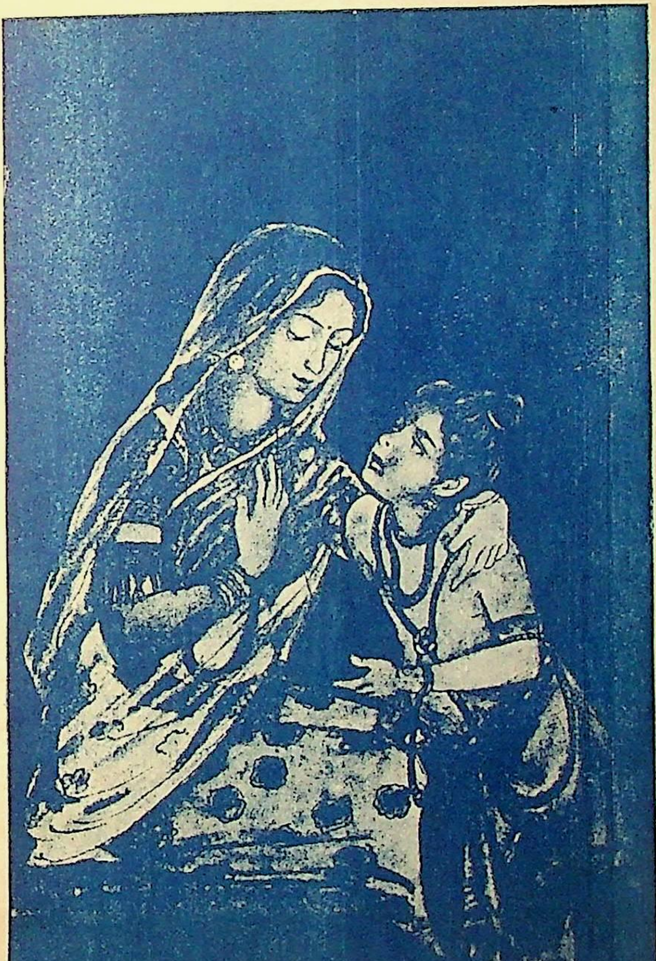
होते हैं। इन सब को इकट्ठे कर जैसा देखनेमें लगे हाथी भी ठीक वैसा ही देखनेमें लगता है।"

पृथ्वी पर मनुष्य इसी तरहसे ईश्वरके सम्बन्धमें आपसमें तर्क वितर्क करता है। जो जिस भाव तथा भेषमें ईश्वरका अनुमान तथा कल्पना करता वह उनका वही रूप कहता है।

इति।

कार्त्तिक।

ये कार्त्तिक भगवतीके छोटे लड़के हैं, उस पर भी आप देवताओंके सेनापति थे। इसीलिये कार्त्तिक का स्वर्गमें सम्मान और रोबदाव बहुत बेशी था। एक दिन कार्त्तिक देवसभासे घरको वापस जा रहे थे। रास्तेमें आते २ उन्होंने देखा कि एक बिल्ली उनके सामनेसे रास्तेको लाँघ कर जानेकी चेष्टा कर रही है। उस समयमें कार्त्तिक उमरके बहुत छोटे थे। लड़कपन उनका उस समय तक न गया था। बिल्लीको देखकर कार्त्तिक को क्याड़ो मनमें आया कि बिल्लीको रास्तेके उस पार नहीं जाने देंगे। जब उनके मनमें यह बात समाई तब उन्होंने एक बरछे से बिल्लीके मुंहमें मारा। बिल्ली म्यों, म्यों करती हुई जिस तरफ से आई थी उसी ओर लौट गई। कार्त्तिक जैसे खुशी मनसे



यह देखकर कार्तिक ने पुछा "ऐ मा ! तुम्हारे मुंह पर यह क्या होगया है ?" पृ:—२५

घरको लौट रहे थे वैसेहो हँसी खुशीसे घर पहुंच कर मा के मुंह की तरफ देखकर एकदम अवाक् हो गये। उनकी मा का मुंह घावके कारण एकदम बिगड़ गया था। यह देखकर कार्त्तिकने पूछा "ऐ मा! तुम्हारे मुंह पर यह क्या हो गया है?"

भगवती ने कोमल स्वरोंसे कहा "बच्चा! यह तुम्हारे ही आघात (चोट) का चिह्न है।" मा की बात सुनकर कार्त्तिक के आश्चर्य्य की सीमा न रही। उनने कहा "यह क्या? मा! मैंने तुझे कब आघात किया?"

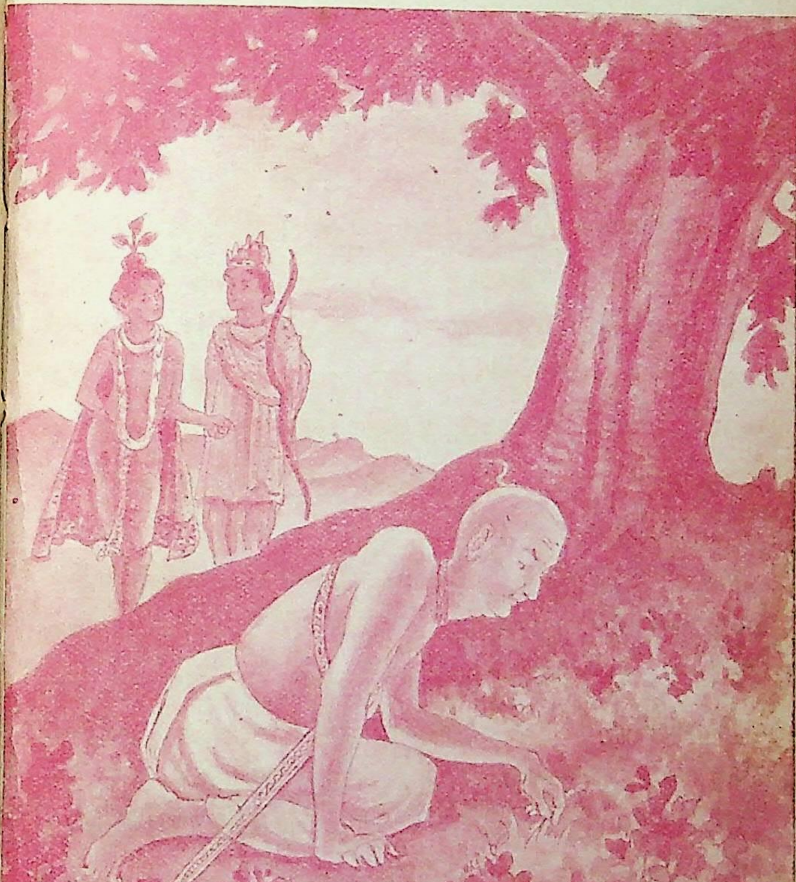
भगवती बोली "बच्चा! तुमने तो मुझे नहीं मारा था किन्तु तुमने आज घर वापस आने के समय एक बिल्लीको बरछेसे घाव किया था।" बिल्लीकी बात कार्त्तिक भूल गये थे। मा के कहने पर वह याद आई। वे लज्जा कर बोले "हाँ मा! वापस आने के समय एक बिल्लीको हमने बरछेसे मारकर घाव किया था। किन्तु उसके साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? इससे उसको तुम्हारा मुंह नोचजानेका क्या मतलब था? भगवती प्यार भरे शब्दों से बोली "बच्चा! सभी जीवधारी मेरी सन्तान हैं। मुझसे ही सभी प्राणी जनमे हैं। तुम जिस किसी को मारोगे वह चोट मुझे लगेगी।"

मा की यह बात सुनकर कार्त्तिकको ज्ञान हुआ। इसके बाद उनने प्रतिज्ञा की कि फिर कभी किसीको बिना कारणसे नहीं पीटूंगा।

इति।

अर्ज्जुन और श्रीकृष्ण ।

मैं श्रीकृष्णको सबसे बढ़कर प्यार करता हूं। मैं श्रीकृष्णको सबसे बढ़कर भक्ति करता हूं यह बात सोचते २ अर्ज्जुनके मनमें एक दिन कुछ अहङ्कार आगया। भगवान्‌कृष्ण तो अन्तर्यामी (मनकी बात जानने वाले) थे। उनने उसी समय इस बातको जान लिया। अहङ्कारसे बढ़कर मनुष्यके लिये दूसरा बड़ा दोष नहीं है। इसीलिये एक दिन श्रीकृष्णने अर्ज्जुनको बुलाकर कहा "चलो अर्ज्जुन! थोड़ा घूमफिर आवें।" दोनों मित्र टहलने के लिये बाहर निकले। कुछ दूर निकलने पर ही अर्ज्जुनने देखा कि एक ब्राह्मण सूखी घास खारहा है और उसके कमर में एक तलवार लटक रही है। ब्राह्मण सूखी घास क्यों खाता है इसको समझनेमें अर्ज्जुन को देरी न लगी। अर्ज्जुनने समझा कि विष्णु का भक्त यह ब्राह्मण है और इसने अहिंसा रूपी परम-धर्म्म ग्रहण किया है। हरी २ घासोंमें प्राण (जी) होता है इसीसे सूखी घास खाता है। किन्तु ब्राह्मण के कमरमें तलवार क्यों बँधी हुई है यह बात नहीं समझ सके। वह बड़े अचरजमें आकर श्रीकृष्णसे पूछने लगे "मित्र! यह क्या बात है? ताके प्राणी की जान न चली जाय इसलिये तो यह सूखी घास चबाता है किन्तु इसके कमरमें तलवार क्यों लटक रही है? श्रीकृष्णने



अर्जुन ने देखा कि एक ब्राह्मण सूखी घास खा रहा है और उस की कमर में एक तलवार लटक रही है। पृः—२६

अर्ज्जुनसे कहा "इसलिये मित्र चलो चलें और उस ब्राह्मण ही से पूछें जिससे सब बातें मालूम हो जायँ।"

भगवान श्रीकृष्णके कथनानुसार अर्ज्जुनने ब्राह्मण के पास जाकर पूछा "हे ब्राह्मण! प्राणीके प्राणका वध लगेगा इस डर से तो तुम सूखी घास खा रहे हो, लेकिन तुम्हारे कमरमें तलवार क्यों लटक रही है?"

उस ब्राह्मणने अर्जुन की तरफ क्रोध भरी दृष्टिसे देखा और उस के बाद दृढ़ स्वरसे (कड़ी आवाज)से बोला "मैं चार आदमियोंको सज़ा देनेके लिये तलवार साथ में रखता हूं। यदि कभी उन लोगों को देख पाऊँ तो उन लोगोंको मुझसे बचनेका कोई उपाय नहीं रहेगा।" अर्ज्जुन उस ब्राह्मण की बातोंको सुनकर चुप हो गये और पीछे उनने पूछा "वे चार आदमी कौन २ हैं? ब्राह्मणने उत्तर दिया "पहला को बदमाश नारद है" अर्ज्जुन— "उसने क्या अपराध किया है?" ब्राह्मण क्रोधके मारे दाँतोंको मीच २ कर बोला "उसका अपराध? उसका अपराध बड़ा कठोर है। वह हमारे प्रभु (श्रीकृष्ण भगवान) के पास दिन रात गात करता हुआ उनको दिक किया करता"।

अर्ज्जुन— "दूसरा कौन है?"

ब्रा०— "द्रौपदी"

अर्ज्जुन— "उसका अपराध?"

ब्रा०— "उसका भी अपराध कम नहीं है। देखो तो उस की ढिठाई। हमारे भगवान भोजन करनेको जा रहे थे उसा

समयमें क्या उसने पुकार कर उन्हें चञ्चल नहीं कर दिया? दुर्व्वासाके शापसे उसकी रक्षा करनेके लिये भगवानने खाना फेंक दिया और तभी सब पाण्डव लोग काम्यबन में मुनिके शापसे बचे। उसके बाद उसने हमारे प्रभु को अपना जूठा खाने दिया। इतने बड़े अपराध पर भी क्या मैं उसे सजा दिये विना स्थिर रह सकता हूं।"

अर्ज्जुन— "तीसरा कौन?"

ब्रा०— "तीसरा प्रह्लाद है। उस छोकड़े की भी ढिठाई कम नहीं है। उस लड़केने तेलके कड़ाहमें भी गिरते समय, हाथीके पाँवों तले पड़ते वक्त और इसी प्रकार खम्भे में ढुकते वक्त उनको पुकारा और स्वयं प्रयत्न करके अपने को बचाना नहीं चाहा।" अर्ज्जुन अवाक् हो गये। तुरत ही फिर पूछा "बाकी चौथा कौन है।" ब्राह्मण क्रोधसे लाल हो गया और क्रोधित स्वरसे बोला "निर्लज्ज अर्ज्जुन।"

अर्ज्जुन— "उसका अपराध?"

ब्रा०— "उसका अपराध सभों से बढ़कर है। उसने क्या मेरे भगवान को अपने रथ का सारथी नहीं बनाया?"

भगवानके प्रति ब्राह्मण की असीम् भक्ति देखकर आपही आप अर्ज्जुन का सिर लज्जाके मारे नीचा हुआ। उस दिनसे उनका सब अहङ्कार छूट गया।

अहङ्कार बड़ा भारी पाप है।

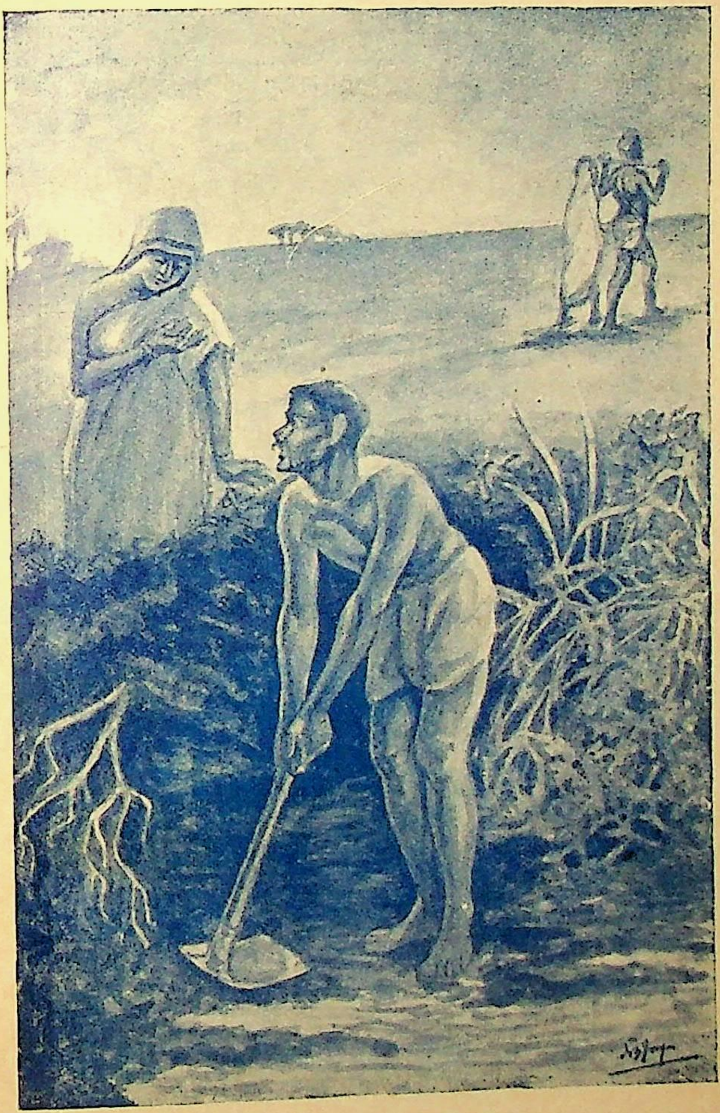
इति।

किसान की प्रतिज्ञा।

किसी देशमें एक किसान रहता था। बहुत समय तक वर्षा न होने के कारण पानी के अभावसे खेतोंकी फसल सूखने लगी। दो एक दिनमें यदि जल न बरसा तो एक भी फसलके बचने की आशा न थी। नदीसे नालियाँ काटकर खेतमें जल लाने के लिये सभी किसान व्याकुल हो उठे और भोर होते न होते उन लोगोंने कुदाल ले खेतमें जाकर नाला काटना शुरू कर दिया। कितने लोग दोपहरसे पहले ही नहाने खानेके किये घर लौटे किन्तु एक किसान अपनी फसलको बचानेके लिये नहाना खाना भी भूल गया। उसने समयको ओर कुछ भी ख्याल नहीं किया और नदी के जल को खेतमें लाने के लिये एक तरफ से नाला काटता ही गया। उस किसान की स्त्रीने यह देखकर कि दोपहर का समय हो गया और अबतक भी स्वामी घर को न लौटे, अपनी लड़कीके हाथमें एक कटोरा तेल देकर खेतको भेजा। किसान की लड़की आकर बोली "बाबा! दोपहरका समय हो गया। मा ने तेल भेज दिया है। तेल लगाकर स्नान करो न।" किसान तबतक भी नाला काटता ही था। उसने लड़की की बातके उत्तरमें कहा "बेटी! आज खेत में यदि जल न आसकेगा तो एक भी फसल न बचेगी। आज खेतमें जल लाना ही पड़ेगा। अभी मुझे नहाने खानेका समय नहीं है।" दो बज

चुका था तोभी उस किसान को नहाने खाने की वात याद न आई। समय जितना ही वढ़ता गया उसकी स्त्री उतनी ही व्याकुल होती थी। रसोई, बसोई सब ठण्ढी पड़ गई।

वह स्त्री और कितनी देर तक रसोई को अगोरती रहेगी? बैठी बैठी पीछे उकतागई और आखिरश स्वयं स्वामी को बुलाने के लिये खेत तक आई। वह स्वामी के पास आकर बहुत उदासीन स्वर से वोली "क्यों गृहस्थ! आज अवतक भी नहाने का समय नहीं हुआ है क्या? रसोई बसोई ठण्ढी होकर एकदम वरफ हो चली। मैं देखती हूं कि तुम्हारे सभी काम हद से ज्यादा होते हैं। अच्छा, हुआ, वहुत हो चुका, अब नहाने खाने को चलो। जो वाकी रह गया है वह कल्हभी पूरा कर सकते हो। वह किसान उस कड़ी धूप में पसीने के मारे तरवतर होकर जीतोड़ मिहनत से नाला काटताही जाता था। एकाएक यह वात उसके कानों में पहूंचते ही मारे क्रोध के उसका शरीर जल उठा। वह कुदाल फेंक कर उठ खड़ा हुआ और स्त्री की तरफ क्रोध भरी आंखों से देख कर बोला "मूरख, अज्ञानी, औरतकी जात! देखती नहीं कि सब फसल मर रही है। फसल के मर जाने पर तुमलोगों को भी भूखों मरना होगा। आज मैंने कसम खाई है कि खेतमें विना जल लाये जलपान तक नहीं करूँगा।" स्वामी से झिड़की खाकर किसान की स्त्री उदासीन मुखसे घर लौट आई और उस किसान ने दिन भर मिहनत करके आखिर में अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करही



"क्यों गृहस्थ ! आज अब तक भी नहाने का समय नहीं हुआ है क्या ? पृष्ठ—२

डाला। सन्ध्या समय नदी का जल जब कल् कल् शब्द करता हुआ उसके खेत में पैठने लगा तब उस के हृदय के भीतर भी एक अपूर्व आनन्द का स्रोत बह चला। वह किसान घर आकर अपनी स्त्री को पुकारकर बोला "एक चिलम तम्बाकू और तेल लाओ।" स्त्री ने तेल और तम्बाकू दिये। किसान ने खुशी के मारे मनमाफिक तम्बाकू पिया। उसके बाद नहाकर खाने को बैठा। उस दिन उस किसान को और कोई भावना या चिन्ता न थी। उस दिन उन्होंने जैसा डट के खाया था वैसी ही गाढ़ी नींद भी उसे आई।

वहीं पर एक दूसरा किसान भी नदी से नाला काट कर जल लाने के लिये आया था किन्तु उसकी स्त्री ने आकर कहा, "दिन बहुत बीत गया, नहाने खाने को चलो।"

जब स्त्री स्वयं पुकारने आई थी तब वह उसे कैसे टाल सकता था। वह एक बार हँस कर बोला "तुम जब स्वयं इतना कष्ट उठाकर मुझे बुलाने आई हो तब क्या मैं और ठहर सकता हूं। चलो, चलें।" किसान कुदाल को कंधे पर रख कर स्त्रीके पीछे पीछे घर चला गया। इसीलिये उसके नाला काटने में विलम्ब हुआ और जल के अभाव से उसके खेत की सारी फसल मारी गई।

खाना, पीना भूल कर बिना दृढ़ प्रतिज्ञ हुए जैसे नदी से नाला काट कर जल लाना असम्भव था वैसे ही भगवान

को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा हुए विना उन्हें पाना किसी मनुष्य के लिये सम्भव नहीं है ।

इति ।

कल्प बृक्ष ।

एक पथिक बहुत दूरसे पैदल आ रहा था। भूख और प्याससे वह बड़ा व्याकुल होकर एक बृक्ष के नीचे बैठ गया। वह पथिक जिस पेड़ के तले आकर बैठा था वह कल्प-बृक्ष था। कल्प बृक्षका यह गुण है कि उसके तले बैठकर जो जिस चीज की इच्छा करेगा वह उसे पावेगा। पथिक उस पेड़ के तले जब थक कर बैठा था तब थोड़ी देरके बाद उसने सोचा कि यदि अभी मैं भरपेट भोजन और एक लोटा ठण्ढा जल पाता तो क्या ही अच्छी बात थी। पथिक के इस बात के सोचने के साथ ही साथ भोजनकी सामग्री और एक लोटा ठण्ढा जल आकर हाजिर हो गया। पथिक के आनन्द की सीमा न रही। वह सब भोजन की सामग्रियोंको खाकर तृप्त हो गया और एक लोटा पानी पीकर खूब मस्त हो गया। कुछ देर के बाद एक और बात उसके मनमें आई कि अभी यदि एक बाघ आकर मुझे मुंहमें रख के ले चले तब ......। पथिक की सब बातें

खतम भी न होने पाई थी कि एक बाघ आकर उसे मुंहमें रखकर चल पड़ा।

भगवान भी ठीक इस कल्प वृक्ष के समान हैं। जो उन्हें दुर्बल या अक्षम समझता है वह उसी अवस्था में रहता है और जो उन्हें सर्व शक्तिमान् समझ कर उनमें विश्वास करता है वह उनसे जो चाहता वही पाता है।

इति।

पुरोहित और ग्वालिन।

एक ग्वालिन नदी पार जाकर एक पुरोहित के घरमें प्रतिदिन दूध पहुंचाया करती थी। किन्तु उतारू (खेवा) नावके कारण उसे प्रतिदिन दूध लानेमें देर हो जाती थी। सब दिन दूध देने में देर होने के कारण एक दिन ब्राह्मण बहुत गरमा कर ग्वालिन से बोले "तुमको हर रोज दूध लानेमें इतनी देर क्यों होती है ?"

ग्वालिन बोली "महाराज! क्या करूं ? देखिये मुझे नदीके उस पार से आना पड़ता है। घाट पर आकर उतारू नावके लिये मुझे बहुत देर तक बैठना पड़ता है इसीलिये देर हो जाती है।" ग्वालिन की बात पर पुरोहित बोले "भगवान का नाम लेकर मनुष्य अनायास ही समुद्र को भी पार कर जाता है और तुम इस छोटी नदी को पार नहीं कर सकती ?" ग्वालिन कुछ न

बोली किन्तु दूसरे दिन से वह ठीक समय पर ब्राह्मण के घर पर दूध पहुंचाने लगी। कुछ दिन बाद पुरोहितने ग्वालिनसे पूछा, "क्यों री, अब तुझे दूध लानेमें देर क्यों नहीं होती ?"

ग्वालिन बोली "महाराज! अब मुझे उतारू नावके लिये घाट पर नहीं बैठना पड़ता। आपही की आज्ञानुसार मैं भगवान का नाम लेकर नदी पार हो जाती हूं।"

पुरोहित ने ग्वालिन की बातों पर बिश्वास नहीं किया। ग्वालिन क्योंकर नदी पार कर जाती इसको स्वयं देखने के लिये उत्सुक हुए। एक दिन ग्वालिन कैसे नदी के पार चली जाती है इसको देखने के लिये ब्राह्मण उसी के साथ चले। ग्वालिन नदी के किनारे आकर एकवार भगवान का नाम लेकर नदी के जल के ऊपर से होकर चलने लगी। पुरोहित उसके पीछे २ चले। किन्तु जब कुछ दूर गये तब देखा कि वे धीरे २ डूबे चले जाते हैं। ब्राह्मण की यह हालत देखकर ग्वालिन बोली "महाराज! यह क्या! आप भगवान का नाम भी लेते हैं और जल में जो कपड़े भींगे जाते हैं उन सब को भी सम्हालते हैं। मैं देखती हूं कि आपको भगवान के ऊपर पूरा बिश्वास नहीं है।"

भगवान के ऊपर अटल बिश्वास न रखने के कारण ब्राह्मण की कैसी बुरी हालत हुई यह तुम लोग समझ ही रहे हो। भगवान के ऊपर यदि पूर्ण बिश्वास रहे तो मनुष्य कठिन से कठिन असाध्य काम को भी साध्य कर सकता है।

इति।



पुरोहित उसके पिछे पिछे चले। किन्तु जब कुछ
दूर गये तब देखा कि वे धीरे धीरे डुबे
चले जाते हैं । [illegible]

लकड़हारा और सन्यासी।

एक लकड़हारा वन में लकड़ी काटता था। उसे बाजार में बेंच कर जो कुछ मिलजाता उसी से किसी प्रकार कष्ट के साथ अपना समय काटता था। एक दिन जब वह जङ्गल में लकड़ी काट रहा था उसके पाससे एक सन्यासी जा रहा था। उसने उस लकड़हारे को लकड़ी काटते देखकर कहा "भाई तुम इस तरह जङ्गल के किनारे ही में क्यों लकड़ी काटते हो। जङ्गल के भीतर पैठो। निश्चय ही तुम्हें ज्यादा पैसा मिलेगा।" सन्यासी चला गया। उस लकड़हारे ने पहले सन्यासी की बात का मतलब नहीं समझा। जो हो, दूसरे दिन वह सन्यासी के उपदेशानुसार बन के भीतर पैठा। बन के भीतर थोड़ी ही दूर जाकर उसने देखा कि जङ्गल के एक भाग में केवल चन्दन ही के वृक्षे हैं। चन्दन के वृक्षों के बन को देखकर उसके आनन्द की सीमा न रही। उससे जितना पार लग सका उतनी चन्दन की लकड़ी को काटकर बाजार में ले आया। चन्दन की लकड़ी थी इसी से और रोज जितना पैसा मिलता था उससे चौगुना उस दिन मिला। अब वह बहुत आराम के साथ दिन बिताने लगा।

एक दिन जब वह लकड़ी काटने गया तब उसके मनमें यह बात समाई कि सन्यासी ने उससे कहा था कि बन के भीतर जाओ किन्तु उनने तो चन्दन की लकड़ी की बात नहीं कही थी!

मैं कुछ और दूर बढ़कर देखूं कि और क्या मिलता है। वह चन्दन के जङ्गल को पीछे छोड़कर और भीतर पैठा। थोड़ी दूर जाकर उसने एक ताँबे की खान देखी। इसी प्रकार वह जितना भीतर जाता गया उतना ही ताम्बे की खान के बाद सोने की खान, सोने के बाद हीरे की खान देखता गया। इस प्रकार बहुत थोड़े दिनों में वह बड़ा धनवान् हो गया।

सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिये उस लकड़हारे के ऐसा बन के किनारे में लकड़ी काटने से काम नहीं चलेगा। बन की भाँति तत्व ज्ञान के भीतर पैठना होगा। जितना पैठोगे उतना ही नवीन २ ज्ञान प्राप्त करोगे। सन्यासी ने उसे कहा था "आगे बढ़ो।" मैं भी कहताहूं कि तुम लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिये आगेबढ़ो। जितनाआगे बढ़ोगे उतना हो नया ज्ञान प्राप्तकर सकोगे।

इति।

ब्यासजी का नदी पार होना।

एक दिन ब्यास जी यमुना पार होने को जा रहे थे। उसी समय गोपियाँ आकर वहीं पर ठहरीं। वे लोग भी यमुना के पार जायंगी। बरसात का समय था। यमुना तब लबालब भरी हुई थी। वहाँ कोई नाव भी न थी। गोपियाँ बहुत घबड़ाईं कि वे कैसे नदी पार होंगी। नदी के किनारे में ब्यास जी

को देखकर गोपियाँ बोलीं "महाराज! हमलोग नदी के पार जायंगी। उतारू (खेवा) की नाव एक भी नहीं है। हमलोग कैसे नदी पार होवेंगी। गोपियों की बात सुनकर व्यास जी बोले "उसके लिये तुम लोग सोच फिकिर मत करो। मैं उसका बन्दोबस्त कर दूंगा। किन्तु मैं बड़ा भूखा हूं। तुम लोग मुझे कुछ खाने को दो।

गोपियों के साथ दूध, मलाई, माखन इत्यादि थे। उन चीजों को व्यास जी को खाने के लिये तुरत ही देदिया। व्यास जी बड़ी तृप्तिकेसाथ वह सब खागये। खाने के बाद गोपियाँ बोलीं "महाराज! अब हमलोगों के पार होने का उपाय कीजिये"

व्यासदेव यमुना के किनारे में खड़े होकर बोले "हे यमुना जी! आज यदि मैंने कुछ नहीं खाया है तो मुझे रास्ता दो" व्यास जी की बातें पूरी भी नहीं हुई थीं कि यमुनाजी दोनों तरफ हट गईं और बीचमें रास्ता खुल गया। इस कौतुक को देखकर गोपियाँ बड़े अचरज में आ गईं। उन लोगोंने मनहीमन सोचा कि यह क्या हुआ? व्यासदेव ने तो यहीं पर भोजन किया था। किन्तु उनने कहा कि यदि मैंने भोजन न किया हो तो यमुना पथ दे। यमुना ने रास्ता भी दिया। इसका क्या मतलब है? इसका जो कारण था गोपियाँ उसे क्यों कर समझ सकती थीं।

व्यासदेव को दृढ़ विश्वास था कि वे कोई नहीं हैं। उनके भीतर में जो भगवान (जीवात्मा) रहते हैं वही सब कुछ

हैं। इसलिये उनने भोजन नहीं किया था। भगवान ही ने खाया था। इसी से उनकी बातों पर यमुना ने रास्ता दिया था। भगवान के ऊपर जो इस प्रकारका विश्वास कर सकता है उसका अपना कह कर इस संसार में कुछ भी नहीं है।

इति।

जटिल और दीनबन्धु भैय्या।

एक देश में एक बालक रहता था। उसका नाम जटिल था। जटिल बड़ा दुखिया था। संसार में मा को छोड़ कर जटिल को और कोई नहीं था। जटिल प्रतिदिन अकेले जङ्गल के रास्ते से पाठशाला जाता था। जङ्गल के रास्ते से जाने में उसे बड़ा डर लगता था। उसने एक दिन अपनी मा से कहा "मा! वन के भीतर के रास्ते से पाठशाला जाने में मुझे बड़ा डर लगता है। जटिल की बात सुनकर उसकी मा की आखों में जल भर आया। उसने कहा "बच्चा! डर किस बात का? जभी तुझे डर मालूम पड़े तभी दीनबन्धु भैय्या कह कर पुकारना। उससे तुम्हारा डर छूट जायगा।"

जटिल ने पूछा "हाँ, मा! दीनबन्धु भैय्या कौन हैं?"

मा ने कहा "तुम्हारा बड़ा भाई।"

उस दिन से पाठशाला जाने के समय जभी जटिल को डर



भगवान ने बालक के रूप में जटिल को दर्शन दिया। पृष्ठ—२८

लगता तभी वह चिल्ला कर पुकारता था "दीनबन्धु भैय्या, दीनबन्धु भैय्या मुझे बड़ा डर लगता है। कहाँ हो। दिखाई दो।"

सरल विश्वासी बालक के पुकारने पर क्या भगवान कभी स्थिर रह सकते हैं? भगवान ने बालक का रूप धर कर उस लड़के को दर्शन दिया। वे जटिल के सामने आकर बोले "यही तो भाई मैं आता हूं। अब तुझे डरने की कुछ जरूरत नहीं है। चलो मैं तुझे पाठशाला तक पहुंचाआऊँ।"

पाठशाला के पास आकर भगवान ने कहा "भाई! जभी तू मुझे पुकारेगा तभी मैं आऊंगा। अब तुझे क्यों कर डर लगेगा।"

सरल हृदय के विश्वास में इतनी शक्ति है कि वह भगवान को भी खींच लासकता है।

इति।

धूर्त्त सुनार।

एक गाँव में एक सुनार रहता था। उसके ऐसे भक्त बहुत नहीं देखे जाते थे। वह सुनार वैष्णव लोगों के ऐसा समूची देह में भगवान के नाम का चन्दन तिलक की छाप लगा कर दूकान पर बैठता था। वह दिनरात केवल भगवान का नाम लेता था। सुनार के आचरण को देखकर गाँव के लोग उसे भलमानुस समझते थे और सभी उस पर बिश्वास करते थे। जब किसी

को जेवर (गहना) गढ़वाने की जरूरत पड़ती थी वह उसी सुनार की दूकान पर जाता था। इसका कारण यह था कि सभी समझते थे कि इस तरह के आदमी से ठगी या राहजानी नहीं हो सकती है। जभी उस सुनार की दूकान पर खरीददार लोग आते थे तभी सुनार घर के भीतर से बोल उठता था "केशव", "केशव"। साथ साथ एक कारीगर भी बोलता था "गोपाल", "गोपाल"। उसके सुर में सुर मिला कर एक दूसरा कारीगर बोलता था "हरे", "हरे"। सुनार भी भीतर से फिर बोलता 'हर' 'हर' इस सुनार से भगवान का नाम सुन कर खरीददारों के मन में एकाएक दृढ़ विश्वास हो जाता था कि यह सुनार बड़ाही धर्मात्मा तथा भलाआदमी है। किन्तु असल बात तो यह थी कि वह सुनार बड़ा धूर्त्त था। वह सुनार भीतर से बोलता था 'केशव' अर्थात् ये सब (लोग) कौन है? कारीगर जबाब देता था कि इन लोगों के चेहरे से मालूम होता है कि ये लोग ग्वाले हैं और गौओं को पालते हैं। तब एक आदमी बोलता था 'हरे', 'हरे' अर्थात् अब कोई इसकी चीज को हरे अर्थात् चोरी करे। सुनार भीतर से आज्ञा देता था 'हर', 'हर' अर्थात् हाँ इसका सब कुछ हर (छीन) लो।

खाली तिलक माला पहनने से जो सभी साधु बन बैठते हैं इसका कुछ भी मतलब नहीं है। जिस के हृदय में भक्ति है, भगवान में अटल विश्वास है वही यथार्थ साधु है।

इति।

दो भाई ।

किसी गाँव में दो भाई रहते थे। कुछ दिनों के बाद बड़ा भाई सन्यासी होकर घर से बाहर निकला। वह अनेक तीर्थ स्थानों में घूमता फिरता बारह बरस के बाद एकबार फिर अपने जन्मस्थान को देखने आया। इतने दिनों बाद बड़ा भाई घर आया है यह सुनकर छोटे भाई के आनन्द की सीमा न रही। बहुत सा वार्त्तालाप होने पर छोटे भाई ने पूछा "अच्छा भाई साहब! आप घर द्वार छोड़कर और सन्यासी होकर बारह बरस पर्य्यन्त घूमे फिरे। अब कहिये कि इससे आपने क्या लाभ किया?" बड़ा भाई मुसकरा कर बोला "मैंने क्या लाभ किया! मेरे साथ आओ तभी तुम देख सकोगे।" यह बात कह कर बड़ा भाई छोटे भाई को साथ लेकर नदी के किनारे आया और पैदल ही पार होकर चला गया। उस घाट पर उतारू नाव (खेवावाली नाव) इस पार से उस पार लोगों को उतारती थी। छोटा भाई एक पैसा खेवा देकर बड़े भाई के पीछे २ उस पार जा उपस्थित हुआ और उसके बाद बड़े भाई की ओर देखकर बोला "भाई साहब! इन बारह बरसों तक आपने इतना कष्ट सहन कर और इतना परिश्रम कर वही चीज़ हासिल की जिसका दाम एक पैसा मात्र है।"

बड़ा भाई छोटे भाई के इस बात का उत्तर नहीं दे सका।

सचमुच उसने जो सामर्थ्य लाभ की थी उसकी कीमत केवल एक पैसा थी।

कोई मामूली सामर्थ्य लाभ करने के लिये जो सन्यासी होता है उसे केवल कष्ट और परिश्रम मात्र होता है। किन्तु जो ईश्वर को पाने के लिये सन्यास ग्रहण करता है उसी का सन्यास ग्रहण करना सार्थक होता है।

इति।

साधु और भगवान।

किसी देश में एक बड़ा धार्म्मिक साधु रहता था। कठिन 'योग' की साधना करके आपने अद्भुत सामर्थ्य को प्राप्त किया था। और सब विषयों में उस साधु का आचरण 'साधु' ही के ऐसा था किन्तु इस अद्भुत शक्ति को पाकर आप के मन में कुछ अहङ्कार (घमण्ड) हो गया था। भगवान इस साधु को कुछ शिक्षा देने के लिये एक दिन ब्राह्मण के रूप में उसके पास आये। साधु ने ब्राह्मण को देखकर उन्हें बैठने के लिये आसन दिया और वहाँ आने का कारण पूछा। उसी समय उसी स्थान से होकर एक हाथी जा रहा था। भगवान ने पूछा "हे महापुरुष! मैंने सुना है कि आपने योग की साधना द्वारा अद्भुत शक्ति प्राप्त की है। अच्छा, महात्मा! आप यदि इच्छा करें तो क्या इस हाथी को अभी मार कर गिरा सकते हैं?"

साधु ने खूब अहङ्कार के साथ उत्तर दिया हाँ "निश्चय कर सकता हूं, यह करना तो कुछ कठिन नहीं है।"

बात समाप्त करने पर उस साधु ने एक मुट्ठी धूली लेकर कुछ मन्त्रों को पढ़ कर हाथी की ओर उसे फेंक दी। हाथी तुरत ही वहीं पर गिर कर मर गया। भगवान ने कहा "आप सचमुच साधु हैं, वाह! क्या आश्चर्यजनक आप की सामर्थ्य है! इतने बड़े हाथीको आपने अनायास ही मार डाला अच्छा यदि आप की इच्छा होगी तो इसे जिला भी अवश्य सकेंगे।" साधु घमण्ड के मारे फूला हुआ बोला हाँ "निश्चय जिला सकता हूं" और एक मुट्ठी धूली लेकर फेंकी तो हाथी जी उठा और जिस ओर जा रहा था उधर ही चला गया। भगवान ने कहा "आप सचमुच सामर्थ्यवान् साधु हैं। किन्तु मेरा एक प्रश्न है। इस हाथी को मार कर और फिर इसे जिला कर आप को क्या फल मिला? इससे क्या आप भगवान को पावेंगे?" भगवान की यह बात सुनकर साधु की आँखें खुलीं। उनने समझा कि यह सब सामर्थ्य किसी काम की नहीं। उस दिन से वह सब अहङ्कार को छोड़ कर ईश्वर को प्राप्त करने के लिये फिर से नयी साधना करने लगे।

मामूली एक शक्ति को प्राप्त करके जो लोग सर्व शक्तिमान् भगवान को भूल जाते हैं वे पृथ्वीपर परम अज्ञानी हैं। एक सामान्य क्षमता लाभकर ईश्वर नहीं मिल सकते।

इति।

अकबर और फकीर।

जब अकबरशाह राज करते थे तब दिल्ली शहर के समीप में एक वन में एक फकीर रहता था। फकीर के पास देश बिदेश के लोग झुण्ड बाँध बाँध के उनसे ज्ञान सीखने के लिये आया करते थे। किन्तु उस दरिद्र फकीर को इतनी औकात न थी कि उनलोगों को अपनी कुटी में रखकर और सब प्रबन्ध करके उन्हें शिक्षा दे सकता था। इसलिये उस फकीर के मनमें बड़ा दुःख और क्षोभ होता था। बहुत सोच विचार कर फकीर ने निश्चय किया कि बादशाह के पास सहायता के लिये भिक्षा माँगूँगा। मनमें ऐसा विचार स्थिर कर एक दिन फकीर अकबर बादशाह के पास गया। बादशाह उस वक्त नमाज़ पढ़ रहे थे। फकीर उनके पीछे जा बैठा। बादशाह ईश्वर से प्रार्थना करते थे "हे ईश्वर। तू मुझे और राज-पाट, धन दौलत, और शक्ति दो।" फकीर जो उनके पीछे ही में बैठा था उनकी प्रार्थना की बातों को साफ साफ सुन रहा था। फकीर एक बात भी न बोल कर धीरे २ उठकर चलनेलगा। अकबर ने फकीर को उठकर जाता देखकर इशारे से उसे कुछ देर बैठने को कहा। बादशाह के हुक्म को फकीर ने नहीं टाला और कुछ देर और बैठा रहा।

नमाज खतम होने पर अकबर ने फकीर से पूछा "फकीर!



बादशाह उस समय नमाज पढ़ रहे थे। फकीर
उनके पीछे जा बैठा। पृष्ठ ७४

आप मुझ से भेंट करने आये थे किन्तु मेरे साथ एक बात भी न करके वापस क्यों जा रहे थे ?" फकीर ने उत्तर दिया "बादशाह ! मैं जिस हेतु आपके पास आया था उसके लिये अब आप को तकलीफ देना नहीं चाहता" किन्तु अकबर ने नहीं माना और उनकी आशा को जानने के लिये जिद्द करने लगे। आखिर मज़बूर होकर फकीर ने कहा "बादशाह ! प्रति दिन झुण्ड के झुण्ड लोग मेरे पास आकर ज्ञान की शिक्षा लाभ करने के लिये जुटते हैं। मुझ में इतनी सामर्थ्य नहीं कि उन सबों को पूरे प्रबन्ध के साथ रख सकूं। इसलिये आपके पास कुछ मदत मांगने के लिये आया था।" फकीर की यह बात सुनकर अकबर बोले "फकीर, तब आप मुझे यह बात न कह कर चले क्यों जाते थे ?" फकीर ने कहा "बादशाह ! जब मैंने देखा कि आप भी एक भिखारी हैं। ईश्वर के पास धन, शक्ति और राज्य की भिक्षा मांगते हैं तब मैंने विचार किया कि भिखारी के पास भिक्षा मांगने से क्या फायदा ? यदि भिक्षा मांगने की ही मुझे जरूरत होगी तो ईश्वर ही से भिक्षा माँगूंगा।"

फकीर की बात पर अकबर कुछ भी नहीं कह सके। फकीर अपनी कूटी को वापस चला गया। अकबर बादशाह के साथ मिलने से उसे एक भारी शिक्षा मिली कि मनुष्य मनुष्य को भिक्षा नहीं दे सकता। सभी मनुष्य कङ्गाल (दरिद्र) हैं।

दरिद्र क्या दरिद्र को भिक्षा दे सकेगा ? जो सभी दुनिया के धन दौलत के मालिक हैं, जिनकी शक्ति असीम है उनको

छोड़कर कोई क्या किसी को कुछ दे सकता है? यदि किसी को भिक्षा ही मांगना हो तो उन्हीं भगवान से मांगना उचित है।

इति।

तम्बाकू बाज।

किसी देश में एक बूढ़ा तम्बाकू पीनेवाला था। एक घड़ी भी यदि बूढ़े को तम्बाकू नहीं मिलता तो वह व्याकुल हो उठता था। एक दिन दो पहर रात को उस बूढ़े की नींद टूटी और उसे तम्बाकू पीने की बड़ी इच्छा हुई। बूढ़ा तुरत बिछौने से उठा और उसने चिलम लेकर उसमें तम्बाकू भरा किन्तु चारों तरफ खोज कर देखा तो आग नहीं मिली। इसलिये वह किसी पड़ोसी के मकान से आग लाने को चला। दो पहर रात का समय था। सभी सो रहे थे। बूढ़े ने बहुत शोर गुल करके एक आदमी को जगाया। इतनी रात को कौन बुलाता है यह देखने के लिये वे लोग घबड़ाकर दरवाजा खोल बाहर निकले और उस बूढ़े को देखकर पूछने लगे "क्यों जी बुड्ढे! इतनी रात को क्यों आये हो! क्या बात है?" बूढ़े ने कहा "और कोई बात नहीं, मैं तम्बाकू पीऊँगा इसलिये आग लेने आया हूं।"

वे लोग उस बुढ़े की बात सुनकर पहले चुप हो गये और

पीछे हँसते २ बोले "इतनी रात को हमारे घर से आग लेने आये हो और खुद तुम्हारे हाते में जो लालटेन जल रही है।"

बूढ़े को तब याद आया। ठीक है, मेरे हाते ही में तो लालटेन जल रही है। बूढ़े ने और कुछ नहीं कहा। जैसे गया था वैसे ही वापस आया।

मनुष्य जो चाहता है वह उसके भीतर ही में वर्त्तमान है किन्तु तोभी लोग माया में पड़कर इस प्रकार से अन्धे हैं कि उन्हें नहीं सूझता और चारों तरफ हाथ फैलाये खोजते फिरते हैं।

इति।

जुलाहे पर बिपत्ति।

किसी गाँव में एक जुलाहा रहता था। वह बड़ा भक्त था। भगवान को छोड़कर वह और कुछ नहीं समझता था। गाँव के सब लोग उस जुलाहे को बहुत मानते और उस में अटल बिश्वास रखते थे। वह जुलाहा जब बाजार में कपड़ा बेंचने जाता था तब किसी खरीददार के पूछने पर ऐसा बोलता था "भगवान की इच्छा से इस कपड़े में एक रुपये का सूता लगा है, भगवान की इच्छा से कपड़ा तैयार करने में मजदूरी चार आने लगी है और भगवान की इच्छा से मुनाफा केवल दो आने। इसलिये भगवान की

इच्छा से इस कपड़े का दाम एक रुपया छ आने हैं।" लोगों को उस जुलाहे के ऊपर इतना अटल बिश्वास था कि उसके साथ मोल तोल न कर मुंहमांगा दाम दे कपड़ा लेकर चले जाते थे।

रात को खाने पीने के बाद प्रति दिन जुलाहा बहुत रात तक घर के दरवाजे पर बैठ भगवान का नाम जपता था और तब सोने जाता था।

एक दिन रात के समय जब वह खा, पीकर घरके द्वार पर बैठ कर भगवान का नाम जपता था तब एक डाकू उसी रास्ते से चला जाता था। वह डाकू अपनी डकैती से हासिल की हुई वस्तुओं को ढो लेजाने के लिये एक बेवकूफ बेगार की खोज में था। वह उस जुलाहे को दरवाजे पर बैठा देख उसी से मोटरी ढोलाने के लिये उसे ज़बरदस्ती पकड़कर ले चला और डाके के माल की गठरी उसके सिर पर रक्खी। उसी समय चौकीदार आ पहुंचा। डाकू को जिधर से मौका मिला भागा। लेकिन जुलाहा नहीं भाग सका। वह माल के साथ पकड़ा गया। उस रात में उसे हाजत में रहना पड़ा। दूसरे दिन चौकीदार ने उसे हाकिम के पास हाजिर किया। इस घटना की बात भोर होते २ सारी बस्ती में फैल गई। गाँव के लोग उस जुलाहे को देखने के लिये झुण्ड के झुण्ड आने लगे। ये सब एक स्वर से हाकिम के पास जाकर बोले "इस आदमी से यह चोरी असम्भव है।" हाकिम ने उस जुलाहे को सब बात कहने को कहा।

जुलाहा बोला "हुजूर! भगवान की इच्छा से कल रात को मैं अपने घर के दरवाजे पर बैठ कर भगवान का नाम ले रहा था। उसी समय, भगवान की इच्छा से, उसी रास्ते से एक डाकू चला जा रहा था। भगवान की इच्छा से वह मुझे ज़बरदस्ती खींच कर अपने साथ ले चला। भगवान की इच्छा से उसने एक मकान में डाका दिया। भगवान की इच्छा से उसने डकैती के माल को बाँध कर मेरे माथे पर चढ़ाया। उसके बाद भगवान की इच्छा से चौकीदार आपहुंचा। भगवान की इच्छा से डाकू भाग गया और मैं पकड़ा गया।"

हाकिम ने जुलाहे की बात समझ ली। वह आदमी बड़ा सीधा तथा विश्वास पात्र है यह समझ कर उनने जुलाहे की रिहाई की। वह जुलाहा छुटकारा पाकर अपने भाई बन्धुओं से कहने लगा 'भगवान की इच्छा से' मैंने रिहाई पाई है।" भगवान के ऊपर सब भार सौंप कर जो केवल अपना कर्त्तव्य करता है वही यथार्थ साधु है।

इति ।

सन्यासी और जमीन्दार ।

एक गाँव में सन्यासी लोगों का एक मठ था। सन्यासी लोग प्रति दिन सवेरे भिक्षा मांगने बाहर निकलते थे। एक दिन एक सन्यासी ने रास्ते में जाते हुए देखा कि उस गाँव का जमीन्दार एक गरीब आदमी को निर्दय होकर पीट रहा है। उस हृदय-विदारक घटना को देख कर सन्यासी का हृदय पसीज गया। वह जमीन्दार के पास जाकर विनीत स्वर से कहने लगा "बस, इस आदमी को और न मारिये।" सन्यासी की बात से जमीन्दार को उसके ऊपर बड़ा क्रोध आया। जमीन्दार ने उस आदमी को छोड़ कर उसी सन्यासी को पीटना शुरू किया और इतनी मार मारी कि वह वहीं पर अचेत हो गया। मठ के सन्यासी लोग यह खबर पाकर उस सन्यासी को उठा के मठ में ले आये और उसके मुंह तथा आँखों पर जल का छींटा देकर उसे होश में लाने की चेष्टा करने लगे। बहुत यत्न करने पर जब उसे होश (ज्ञान) हुआ तो उस सन्यासी ने आँखें खोलीं। तब और और सन्यासी लोग पूछने लगे "भाई! अभी जो लोग तुम्हारी सेवा शुश्रूषा कर रहे हैं क्या उन्हें पहचानते हो?" उस सन्यासी ने धीरे २ कहा "जिसने मुझे पहले मारा था वही मेरी सेवा कर रहा है।"

सचमुच जो साधु हैं उन्हें शत्रु मित्र का भेद नहीं रहता। वे सभी की आत्मा में भगवान ही को देखते हैं।

इति।

मछुवे की मछली चोरी।

एक देश में एक मछुवा रहता था। वह रात को दूसरों के तालावों (पोखरों) से मछलियां चुरा लाता था। एक दिन वह मछुवा अन्धेरी रात में मछलियां चुराने के लिये एक आदमी के बाग़ में घुसा। बाग़ के बीच में पोखरा था। मछुवे ने चुपचाप पोखरे के नजदीक जाकर उस में जाल फेंक दी। पोखरे का मालिक जगा हुआ पहरा दे रहा था। जल में छप २ का शब्द सुन कर पोखरे के मालिक ने चोर को पकड़ने के लिये तुरत दो आदमियों को भेजा। चिराग़ लेकर दो आदमी पोखरे की ओर आ रहे हैं यह देख कर उस मछुवे ने जल्दी से जाल को फेंक दी और साधु का भेष बना कर सारी देह में राख मल के एक वृक्ष के नीचे जा बैठा। जो लोग चोर को पकड़ने आये थे वे किसी को नहीं देख सके। केवल एक साधु को वृक्ष के नीचे बैठे हुए देखा। पोखरे के मालिक के पास आकर वे लोग जैसा देख आये थे वैसाही कहने लगे। पोखरे के मालिक ने जब सुना कि उसके बाग़ में साधु आये हैं तो तुरत उठा और वहां जाकर साधु को प्रणाम किया और खाने की बहुत-सी सामग्रियां भी भेज दीं। वह मछुवा भागने को चाहता

भी था तोभी भागने का सुभिता न देख कर नहीं भाग सका। इतने में सबेरा हुआ। झुण्ड के झुण्ड लोग साधु का दर्शन करने के लिये आने लगे और जिससे जो बन पड़ा उसने उसी तरह उस साधु की सेवा शुश्रूषा की। मछुवे ने मनही मन सोचा क मैं साधु नहीं हूं केवल साधु का भेष बना कर बैठा हूं इस पर तो लोग मुझे इतना सम्मान कर रहे हैं। यदि मैं असली साधु होता तो न जाने लोग और कितना आदर और भक्ति करते। ऐसा होने पर क्या मैं भगवान को पा सकता हूं? यह बात जभी उसके मन में समाई तभी उस मछुवे के मन का मैल (पाप) दूर हो गया। उसने उसी दिन समझा कि संसार मिथ्या है। केवल ईश्वर ही सत्य हैं। तब सब काम धन्धा छोड़ कर साधु हो गया और सन्यासी होकर घर से बाहर निकल गया।

साधु का भेष बनाने में भी इतना चमत्कार है कि उससे उसके मन का मैल (पाप) दूर हो जाता है।

इति।

किसान का लड़का ।

एक किसान को हरि नाम का एक बड़ा सुन्दर बच्चा हुआ था। किसान उस बच्चे को प्राण से भी अधिक प्यार करता था। अकस्मात् एक दिन वह बच्चा कै (उल्टी) की बीमारी से मर गया। उस बच्चे के मर जाने पर सभी हाहाकार मचा कर रोने लगे। किन्तु किसान उसके लिये कुछ भी दुःखी या कातर नहीं हुआ। वह घर के और और लोगों को अनेक तरह से समझा कर तसल्ली देने लगा। किसान की यह हालत देख कर उसकी स्त्री को अपने स्वामी के ऊपर बड़ा क्रोध हुआ। वह दुःख के साथ किसान से बोली! "ऐसा अच्छा बच्चा मर गया। तुम्हारा हृदय क्या पत्थर का है? उसके लिये एक बूंद भी आँसू नहीं गिराया। घर के सभी लोग रो रहे हैं लेकिन तुम तो बड़े शान्त और निश्चिन्त हो।" किसान धीरे धीरे बोला "देखो कल रात को मैंने स्वप्न देखा कि मैं राजा हो गया हूं। मेरे आठ लड़के हैं। उनके साथ मैं सुख पूर्वक राज कर रहा हूं। यह मुझे मालूम नहीं होता है कि इन आठ लड़कों के लिये रोऊँ या अपने 'हरि' के लिये"?

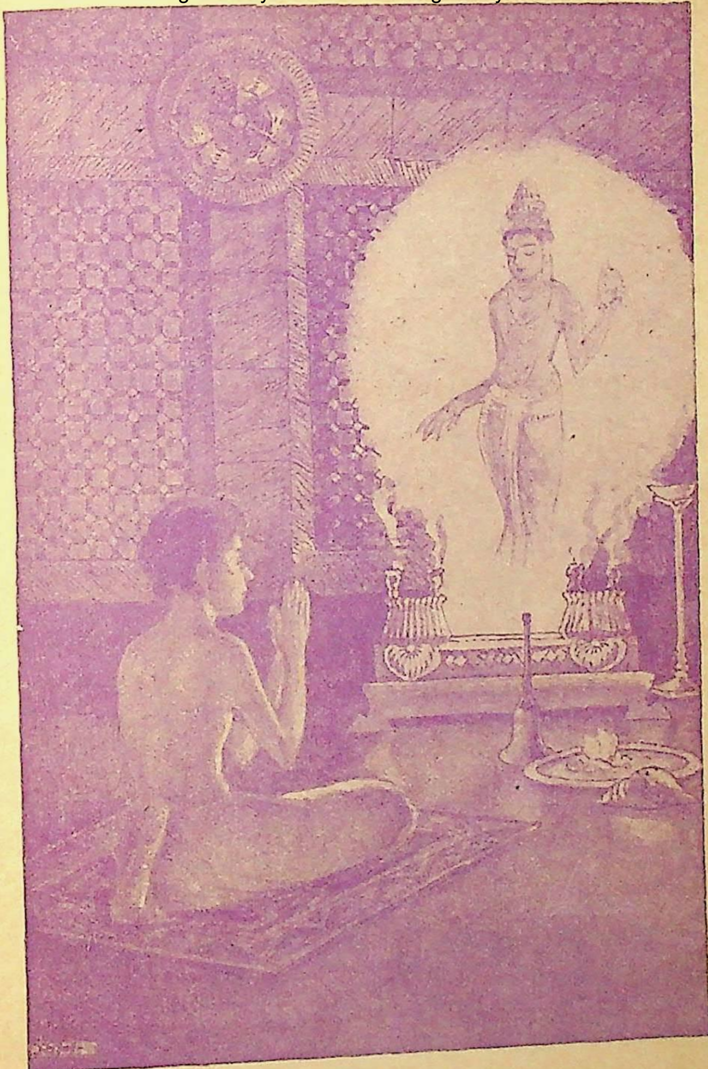
वह किसान सचमुच बड़ा ज्ञानी पुरुष था। वह समझता था कि हम लोग जागृत अवस्था में जो कुछ करते या देखते हैं

वे सब स्वप्न के समान मिथ्या हैं। भगवान को छोड़ कर पृथ्वी पर सत्य पदार्थ कुछ भी नहीं है। इसलिये ज्ञानी पुरुष शोक या दुःख से एकाएक विचलित नहीं होते।

इति ।

पुरोहित का लड़का ।

एक गाँव में एक ठाकुर जी का मन्दिर था। इस मन्दिर के जो पुरोहित थे अर्थात् जो प्रति दिन ठाकुर जी की पूजा करते थे उन्हें एक दिन दूसरे गाँव में जाने की सख्त जरूरत पड़ी। एक दिन उनने यह देखकर कि रात को नहीं लौट सकेंगे अपने लड़के को बुला कर कहा "आज रात को तुम्हीं पूजा कर लेना शायद उस वक्त तक मैं वापस नहीं आसकूंगां।" पुरोहित लड़के के ऊपर पूजा का भार सौंप कर चले गये। पुरोहित का लड़का सन्ध्या होने पर ठाकुर जी को भोग लगाने के लिये मन्दिर में गया। पुरोहित का लड़का कभी ठाकुर की पूजा नहीं करता था, पूजा कैसे की जाती है सो भी नहीं जानता था। मन्दिर के भीतर जाकर ठाकुर जी का नैवेद्य देख उसने सोचा कि ठाकुर जी अपनी प्रतिमा से बाहर आकर निश्चय प्रतिदिन ये सब चीजें खाते हैं। इससे वह बहुत देर तक आँख लगा कर ठाकुर जी के पास बैठा तोभी ठाकुर जी को बाहर होते



वह तोभी ठाकुर जी को बाहर होते न देखकर
दोनों हाथ जोड़कर बोला "हे ठाकुरजी!
जल्दी से भोग लगाओ"। पृष्ठ—५५

न देख कर दोनों हाथ जोड़ कर बोला "हे ठाकुर जी! जल्दी से आकर भोग लगा लो। बहुत रात हो रही है। मैं लड़का ठहरा, और कितनी देर तक बैठूँगा।"

किन्तु ठाकुर जी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। ठाकुर जी को आता न देख कर पुरोहित के लड़के को कुछ डर लगा। वह रोने लगा और रोता २ बोला "ठाकुर जी! मेरे पिता जी मुझे तुम्हारी पूजा करने को कह गये हैं, मैं मन्त्र, तन्त्र कुछ नहीं जानता, इसीलिये क्या तुम नहीं आरहे हो?"

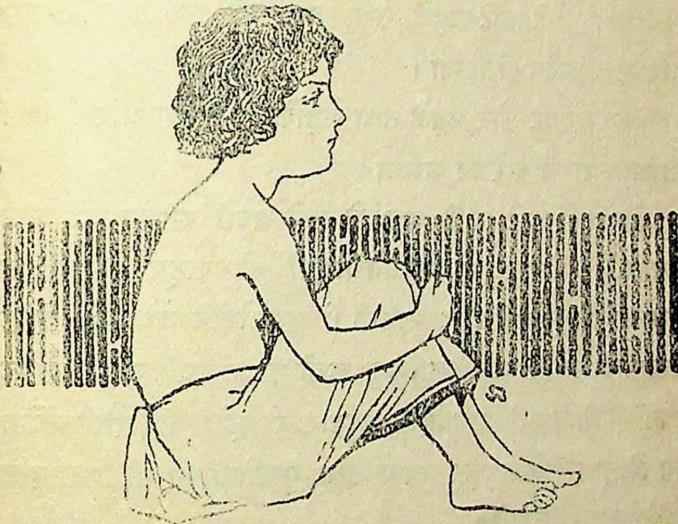
पुरोहित का लड़का और कुछ नहीं बोल सका केवल फूट २ कर रोने लगा। थोड़ी देर में उन्होंने ठाकुर जी को खाते हुए देखा। ठाकुर जी के खाने के बाद पुरोहित का लड़का जब मन्दिर से बाहर निकल आया तब सभी पूछने लगे "नैवेद्य कहाँ रख आये हो?" पुरोहित का लड़का बोला "नैवेद्य! वह तो सब ठाकुर जी खा गये हैं।"

"ठाकुर जी खा गये हैं" यह बात पुरोहित के लड़के से सुन कर सभी अचरज में आगये। उसके बाद मन्दिर के भीतर पैठ कर नैवेद्य के बर्त्तनों को खाली देख कर सभी के आश्चर्य्य की सीमा न रही।

सीधे सरल विश्वास में ऐसी शक्ति है कि उससे पत्थर के ठाकुर जी भी सजीव होकर भोजन करने लगे।

॥ समाप्त ॥

हिन्दी शिशुतोष ग्रन्थमाला ।



हिन्दी साहित्य में नवजीवन। विराट् आयोजन। आज भारतमें नई जागृति है, नया प्रवाह है, नई ज्ञान है और नई आवश्यकता है।

इस ग्रन्थमाला में छोटे छोटे लड़के तथा लड़कियों की उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित होंगी।

इसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

(क) छोटे छोटे लड़के तथा लड़कियों का चरित्र गठन।

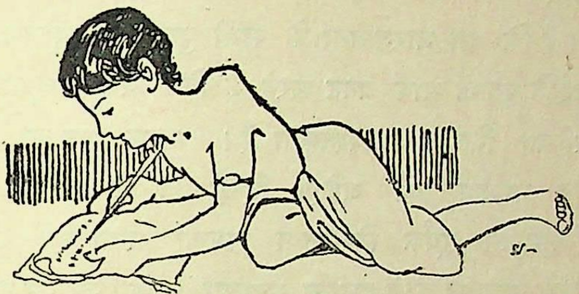
(ख) छोटे छोटे लड़के तथा लड़कियों का नैतिक उन्नति-साधन।

(ग) छोटे छोटे लड़के तथा लड़कियों के मन में स्वदेशप्रेम तथा आत्मपरिचय कराना।

(घ) छोटे छोटे लड़के तथा लड़कियों को आत्मविश्वास और स्वावलम्बन सिखाना।

(ङ) छोटे छोटे लड़के तथा लड़कियों को देश और विदेशों की अवस्था से परिचय कराना।

हिन्दी में छोटे छोटे बच्चों के लिये अच्छे साहित्यका परम अभाव है। सरकारी विश्वविद्यालयों की पाठ्य पुस्तकें इस अभाव को दूर नहीं कर सकतीं। हमलोगोंने जो यह 'हिन्दी शिशुतोष ग्रन्थमाला' प्रकाशित करने को ठाना है उससे केवल बच्चों ही के उपयोगी साहित्य भण्डार की पूर्त्ति नहीं होगी बल्कि इन किताबों को पढ़कर युवकों तथा युवतियों की भी चित्त-वृत्ति विकसित हो उठेगी।



विनीत निवेदन ।

भारत के भविष्य जातीय जीवन के जो आशावृक्ष और लताएं हैं उनकी सुशिक्षा के लिये जो यह आयोजन किया गया है वह तभी सफल हो सकता है जबकि हमारे अनुभवशील, देशसेवी तथा मातृभाषानुरागी सज्जन और शिक्षकगण पूर्ण सहानुभूति और सहायता दें। शिक्षा को विस्तार करना ही हमलोगों का मुख्य उद्देश्य है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी-भाषा भाषी प्रान्तों के सभी शिक्षकगण हमारा साथ जरूर देंगे। हिन्दी भाषाभाषी प्रदेश ही क्यों, सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रत्येक घर में यदि राष्ट्रभाषा अर्थात् (सरल) हिन्दी में लिखी हुई इस ग्रन्थमाला की कितावें स्थान पावेंगी तब हम अपने को सफल-मनोरथ समझेंगे।

इसके अतिरिक्त हम यह भी कह देना उचित समझते हैं कि भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों के लोग भिन्न भिन्न भाषाएं

बोलते हैं। यह सभी अनुभवी विद्वानों का निर्विवाद विचार होगया है कि हम भारतमाता के सभी पुत्र तथा पुत्रियों को परस्पर के मन के भाव प्रगट करने के लिये एक राष्ट्रभाषा के प्रचार की नितान्त आवश्यकता है। भारत भर की सभी प्रान्तीय भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी ही अधिकतर बोली और सुगमता पूर्वक विशेषतया समझी जाती है। प्रातः-स्मरणीय पूज्यपाद कलि दधीचि महात्मा गान्धी जी का कथन, सिद्धान्त तथा सदुपदेश है कि हम भारतीयों के लिये हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है। सभी उसी की सेवा करो, पूजा करो और तभी तुम्हारा उद्धार और कल्याण होगा।

ताकि हमारे भारतीय भाईसब तथा बहिनें भाषारूपी एकता की डोरी में बंधकर देशोन्नति के हेतु कटिबद्ध तथा तत्पर हों अतः उनलोगों के लिये हमारा तुच्छ साधन भी कुछ काम का अवश्य होगा।

ताकि हमारे बच्चे सुगम रीति से समझ सकें इसलिये सभी पुस्तकें अत्यन्त सरल भाषा और कुछेक गल्पों के रूप में बालकों के मनोरञ्जनार्थ लिखी गई हैं। बीच बीच में बाल विनोदार्थ रङ्गीन चित्र भी दिये गये हैं।

बङ्गला शिशुतोष ग्रन्थमाला तथा सुलभ उपन्यासमाला प्रकाशित कर मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। प्रत्येक ग्रन्थमाला के सौ से अधिक ग्रन्थ खप चुके हैं और दिनों दिन मांग बढ़ती जा रही है। इसीसे यह ग्रन्थमाला प्रकाशित करने

की उत्तेजना हुई है। सुलभ उपन्यासमाला भी शीघ्र ही निकालने का विचार है।

नियम।

जो सज्जन इस ग्रन्थमाला के स्थायी ग्राहक होकर मुझे सूचना दे अपना नाम मुफ्त अर्थात् बिना प्रवेशिका फीस के, दर्ज करालेंगे उन्हें किसी पुस्तक के लिये डाक व्यय, मनीआर्डर पैकिङ्ग, वी० पी० प्रभृति का खर्चा नहीं देना पड़ेगा। इन दिनों डाक महसूल जितना बढ़गया है वह आप सज्जनों से अविदित नहीं है। छोटी सी छोटी पुस्तक भेजने में ५, ६ आने पड़ जाते हैं। सम्प्रति आठ आने ॥०) से लेकर १) एक रुपये तक की कितावें प्रकाशित करने का विचार है। जो महाशय पुस्तकों का मूल्य पोष्टेज ष्टैम्प द्वारा भेज देंगे उन्हें वी० पी० प्रभृति का खर्चा नहीं देना पड़ेगा अतएव जहाँ आठ आने की किताब के लिये चौदह आने लग जाते वहाँ आठ आने मात्र लगेंगे।

शिशुतोष ग्रन्थमाला की कुछ पुस्तकोंका परिचय ।

१ली--रामकृष्ण की गल्पें—बालोपयोगी श्रीरामकृष्ण परमहंस का संक्षिप्त जीवन चरित्र तथा रोचक और मनोहर मनोहर गल्पें पुस्तकाकार में छप कर तयार हैं। इसमें ८ रङ्गीन चित्र हैं ।मूल्य ॥०)

छप रही हैं :—

२री--विज्ञान चित्र और गल्पें—इस पुस्तक में गूढ़ वैज्ञानिक तत्व तथा आविष्कार, बच्चों को सुलभ रीतिसे समझने योग्य बनाने के हेतु गल्पों के रूपमें लिखे गये हैं। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति, रेलगाड़ी, व्योमयान (हवाई जहाज), दिङ्निर्णयकारी यन्त्र, घड़ी, दियासलाई, बायस्कोप, दूरवीक्षण तथा अणुवीक्षण यन्त्र, बिजली की रौशनी तथा पंखे, तार, बेतार का तार, पौधों में प्राण का अस्तित्व इत्यादि विषयक आविष्कारों की बातें चित्ताकर्षक गल्पों के रूप में लिखी गई हैं।

इसमें लगभग ३० रङ्गीन चित्र होंगे। चमड़े की सुन्दर ज़िल्द। मूल्य १)

३री--गोस्वामी महात्मा तुलसीदासजी कि रामायण—इस पुस्तक का कुछ भी परिचय देना सूरज

के सामने दिया दिखाने के बराबर होगा। बालोपयोगी बनाने के हेतु इससे शृङ्गार रस तथा गूढ़ विषय सम्बन्धी पद्य निकाल दिये गये हैं। लगभग ६० चित्र रहेंगे जिनमें अधिकतर रङ्गीन रहेंगे। यह पुस्तक कुछ बड़ी होगी।

४थी--शिल्पकला चित्र और गल्पें—इसमें संसार भरके अत्युत्कृष्ट चित्रकारों के संक्षिप्त जीवन चरित्र सम्बन्धी टिप्पणियां भी रहेंगी। इसमें लगभग ५० चित्र रहेंगे। चूंकि यह बालकों के लिये है अतएव एक भी आपत्तिजनक अश्लील चित्र इसमें नहीं रहेगा।

एजेण्टों को पूरा कमीशन दिया जायगा। कृपया पत्र व्यवहार करें।

भवदीय कृपाभिलाषी।

शिशिरकुमार मित्र बी० ए०।

शिशिर पब्लिशिं हाउस।

कालेज ष्ट्रीट मार्केट

कलकत्ता।